कोटद्वार, गुरूवार
17 अक्टूबर 2024
वर्षः 46
अंकः 168 पृष्ठः 4
मूल्यः 2.00
RNI No.UTTHIN/2005/16338

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक : स्व. नरेन्द्र उनियाल

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोनः 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

मां शाकुंभरी देवी मंदिर मेले में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

रुड़की। शरद पूर्णिमा के मौके पर मोहम्मदपुर जट पावर हाउस स्थित सिद्ध पीठ मां शाकुंभरी देवी मेले में शनिवार को श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। दूर दराज से हजारों की संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने देवी मंदिर में प्रसाद चढ़ाकर मन्नतें मांगी और मेले का आनंद लिया। चार दिवसीय मेले में गुरुवार को दंगल का आयोजन भी होगा।

मोहम्मदपुर जट्ट पावर हाउस स्थित तकरीबन एक एकड़ से ज्यादा भूमि पर मां शाकुंभरी देवी का भव्य मंदिर स्थापित है। यहां पर प्रतिवर्ष शरद पूर्णिमा के मौके पर मेले का आयोजन किया जाता है। बुधवार अल सुबह से यहां श्रद्धालुओं का आना प्रारंभ हो गया था। मां शाकंभरी देवी मंदिर में प्रसाद चढ़ाने के लिए श्रद्धालुओं की लंबी लाइन शाम तक बनी रही। काफी संख्या में आई भीड़ को नियंत्रित करने के लिए यहां पुलिस बल तैनात किया गया था।

देवी माता के दर्शन करने के बाद मेले में महिलाओं व बच्चों ने जमकर खरीददारी की। कुछ श्रद्धालुओं ने भंडारे का आयोजन भी किया। मोहम्मदपुर जट्ट के ग्राम प्रधान संजय ने बताया कि पावर हाउस स्थित माता का मंदिर ऐतिहासिक मंदिर है। काफी दूरदराज से लोग यहां पर देवी के दर्शन करने के लिए आते हैं। उन्होंने बताया कि इस बार भी मेले पर हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। गुरुवार और शुक्रवार को दंगल का आयोजन भी होगा। इस दौरान नारसन ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि कविंद्र सिंह, धीर सिंह, रवि कुमार, वैभव कुमार, देवी सिंह, आदेश कुमार आदि लोग मौजूद रहे।

जिलाधिकारी की छापेमारी में तीन कर्मचारी नहीं मिले

हरिद्वार। जिलाधिकारी कर्मेंद्र सिंह ने बुधवार को एआरटीओ कार्यालय और जिला आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी कार्यालय में छापेमारी की। एआरटीओ कार्यालय में छापेमारी में आउटसोर्स से रखे गए तीन कर्मचारी नदारद मिले, जबकि जिला आयुर्वेदिक एवम यूनानी अधिकारी कार्यालय में सभी कार्मिक उपस्थित मिले। जिलाधिकारी ने एआरटीओ कार्यालय में अनुपस्थित मिले आउटसोर्स कर्मचारियों का स्पष्टीकरण लेने तथा भविष्य में नदारद रहने पर सेवाएं समाप्त करने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने जनपद में तैनात सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आदेश दिये कि कोई भी अधिकारी एवं कर्मचारी अवकाश स्वीकृत कराये बिना कार्यालय से अनुपस्थित नहीं रहेगा। जनता के कार्यालय पहुंचने से पहले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्धारित समय पर कार्यालय पहुंचना होगा।

चंडी चौदस पर भव्य रूप से सजाया गया मां चंडी देवी मंदिर, उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

हरिद्वार। चंडी चौदस पर मां चंडी देवी के दर्शनों को मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रही। इस दौरान श्रद्धालुओं ने पूजा अर्चना कर सुख-समृद्धि की कामना की। चंडी देवी मंदिर को विभिन्न प्रजाति के फूलों से भव्य रूप से सजाया गया।

मां चंडी देवी मंदिर परमार्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत रोहित गिरी ने मंदिर प्रांगण में भक्तों को मां की महिमा बताते हुए कहा कि नवरात्रों में मां के नौ स्वरूप मां भगवती चंडी देवी से मिलने आती हैं।

चंडी चौदस पर विशेष पूजा-अर्चना के बाद सभी देवियां जगत कल्याण के लिए अपने स्थान लौट जाती हैं। मां चंडी देवी के मंदिर में नियमित रूप से पूजा पाठ और व्रत का पालन करने वाले साधकों की मां चंडी देवी सभी मनोकामना पूरी करती हैं। जगत की अधिष्ठात्री देवी मां चंडी देवी की शरण में आने वाले प्रत्येक श्रद्धालु का कल्याण निश्चित है।

मानव जाति के कल्याण के लिए अवतरित हुई मां दुर्गा की शक्ति अपरंपार है। मां चंडी देवी का अलौकिक प्रताप आसुरी शक्तियों से श्रद्धालु भक्तों की रक्षा करता है। देवभूमि उत्तराखंड आने वाले श्रद्धालु भक्तों को अपने जीवन को भवसागर से पार लगाने के लिए मां के दर्शन अवश्य करने चाहिए।

थूक जिहाद पर उत्तराखंड सरकार का बड़ा एक्शन

एक लाख तक जुर्माना, बताना होगा मीट झटका या हलाल

देहरादून। उत्तराखंड में खाद्य पदार्थों में थूकने की घटना सामने आने के बाद मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर पुलिस विभाग सख्त कार्रवाई के मूड में है। पुलिस महानिदेशक ने इस संदर्भ में सख्त ऐक्शन के आदेश जारी किए हैं। हाल ही में मसूरी में नौशाद अली और हसन अली को चाय के बर्तन में थूकने और उस चाय को ग्राहकों को पिलाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। इस घटना के बाद सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा था कि 'देवभूमि उत्तराखंड में धर्मांतरण, थूक जिहाद और जमीनों पर अवैध अतिक्रमण नहीं चलेगा।' अब सीएम धामी ने खाद्य पदार्थों में थूकने की घटनाओं पर सख्त निर्देश दिए हैं। सीएम ने कहा है कि यदि कोई ऐसा कुकृत्य करते हुए पाया जाएगा तो उसके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। सीएम के निर्देश के बाद पुलिस महानिदेशक की ओर से सूबे के पुलिस अधिकारियों के लिए एक गाइडलाइन जारी हुई है।

उत्तराखंड के कार्यवाहक पुलिस महानिदेशक अभिनव कुमार की ओर से अधीनस्थ पुलिस अधिकारियों को जारी दिशा-निर्देश में कहा गया है कि होटल और ढाबों आदि जगहों पर पेय एवं खाद्य पदार्थों में थूकने की घटनाएं सोशल मीडिया में वायरल हो रही हैं। इनका सीधा संबंध स्वास्थ्य एवं खाद्य विभाग से है। कानून व्यवस्था के लिहाज पुलिस की कार्रवाई भी जरूरी हो जाती है। इन घटनाओं को देखते हुए होटल/ढाबा आदि संस्थानों में काम करने वालों का शत-प्रतिशत सत्यापन करने का निर्देश दिया जाता है। उत्तराखंड के कार्यवाहक पुलिस महानिदेशक अभिनव कुमार ने सभी वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों और समस्त जनपदों को निर्देश दिए कि वे होटल, ढाबा एवं खानपान से जुड़े अन्य व्यवसायिक संस्थानों में कार्यरत कर्मचारियों का शत-प्रतिशत सत्यापन सुनिश्चित करें। साथ ही इन संस्थानों के रसोई घरों में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने पर जोर दिया जाए। यही नहीं खुले में खोखा, रेहड़ी जैसी खाने पीने की दुकानें चलाने वाले कारोबारियों पर विशेष नजर रखने के लिए स्थानीय अभिसूचना इकाई की सहायता ली जाए। गश्त एवं पैट्रोलिंग के समय इन बातों का विशेष ध्यान रखा जाए। जरूरत पड़ने पर स्वास्थ्य एवं खाद्य विभाग से संपर्क कर के होटल, ढाबा आदि व्यवसायिक संस्थानों में औचक चैकिंग की जाये।

थूक जिहाद को लेकर देहरादून के रेस्टोरेंट-ढाबों पर छापे

देहरादून। थूक जिहाद को लेकर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के कार्रवाई के निर्देश के बाद पुलिस महकमा हरकत में आ गया है। डीजीपी के निर्देश के क्रम में दून पुलिस ने शहर में अभियान चलाकर होटल, रेस्टोरेंट व ढाबों में छापेमारी शुरू कर दी है। एसएसपी अजय सिंह खुद होटलों के किचन की व्यवस्थाएं जांच रहे हैं। सभी थाना क्षेत्रों में व्यापक अभियान चलाकर स्वच्छता और सीसीटीवी कैमरों की जांच की। सभी प्रतिष्ठानों की किचन में सीसीटीवी कैमरे सुनिश्चित करने को कहा गया है। इस दौरान किचन में बेहतर साफ-सफाई पाए जाने पर प्रतिष्ठान के संचालक को पुष्प देकर प्रोत्साहित किया गया।

व्यापक सत्यापन व चेकिंग अभियान चलाया

एसएसपी अजय सिंह ने सभी थानों को अपने क्षेत्र में स्थित होटल/ढाबों/फूड वैन समेत पेय एवं खाद्य पदार्थों को बेचने वाले सभी प्रतिष्ठान में सफाई व्यवस्था, हाइजीन की जांच और किचन में सीसीटीवी कैमरे लगे होने की यथास्थिति को जांचने निर्देश दिए गए हैं। जिसके अनुपालन में जनपद के नगर व देहात क्षेत्र के सभी थाना क्षेत्रों पुलिस टीमों व गौरा चीता यूनिट ने व्यापक सत्यापन व चेकिंग अभियान चलाया।

मुकेश बोरा को हाईकोर्ट से फिर नहीं मिली राहत

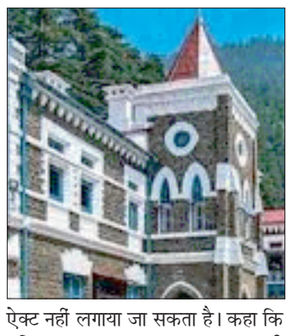

नैनीताल। हाईकोर्ट ने एक महिला के साथ दुष्कर्म और इसकी नाबालिग बेटी से छेड़छाड़ के आरोपी नैनीताल दुग्ध संघ, लालकुआं के अध्यक्ष मुकेश बोरा के जमानत प्रार्थना पत्र पर बुधवार को सुनवाई की। न्यायाधीश न्यायमूर्ति रविंद्र मैठाणी की एकलपीठ ने फिलहाल मुकेश बोरा को कोई राहत नहीं देते हुए राज्य सरकार से चार सप्ताह में जवाब पेश करने को कहा है। अगली सुनवाई चार सप्ताह बाद होगी। भाजपा से निष्कासित दुग्ध संघ अध्यक्ष बोरा के अग्रिम जमानत प्रार्थना पत्र एवं गिरफ्तारी पर रोक संबंधी याचिका को इससे पहले हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया था। आरोपी की तरफ से कहा गया कि उसे जमानत दी जाए। उसे मामले में उसे षड्यंत्र के तहत फंसाया गया है। यह घटना 2021 की है। दो साल आठ माह बीत जाने के बाद अब उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि लालकुआं कोतवाली में दर्ज एफआईआर में कहीं भी छेड़छाड़ का आरोप नहीं है। ऐसे में उसके ऊपर पॉक्सो ऐक्ट नहीं लगाया जा सकता है। कहा कि महिला उस पर बार-बार दवाब डाल रही थी कि उसे नियमित किया जाए। जबकि वह दुग्ध संघ की कर्मचारी न होकर मैन पावर सप्लाई करने वाली कंपनी की ओर से आउटसोर्स कर्मचारी थी। याचिकाकर्ता की ओर से दलील दी गई कि जब दुग्ध संघ अध्यक्ष की हैसियत से इस मैन पावर कंपनी का टेंडर निरस्त किया, तो इन लोगों ने मिलकर षड्यंत्र के तहत उसे फंसाया है। वहीं, कोर्ट में सरकार और पीड़िता की तरफ से बोरा के जमानत प्रार्थना पत्र का विरोध किया गया।

जम्मू-कश्मीर की नई सरकारः उमर मुख्यमंत्री, सुरिंदर चौधरी डिप्टी सीएम

जम्मू। नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने बुधवार को केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के पहले मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने श्रीनगर के शेर-ए-कश्मीर इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर (एसकेआईसीसी) में अब्दुल्ला और उनके मंत्रियों को शपथ दिलाई।

मेंढर से नेशनल कॉन्फ्रेंस के विधायक जावेद अहमद राणा, रफियाबाद से जावेद अहमद डार, डीएच पोरा से सकीना इट्टू और नौशेरा से सुरिंदर कुमार चौधरी को भी एलजी सिन्हा ने कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ दिलाई। सुरिंदर चौधरी डिप्टी सीएम बनाए गए हैं। सुरिंदर चौधरी ने नौशेरा से भाजपा के रविंदर रैना को हराया है।

छंब विधानसभा सीट से निर्दलीय विधायक सतीश शर्मा को उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व वाले मंत्रिमंडल में जगह दी गई। शपथ ग्रहण समारोह में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा भी मौजूद रहीं। वहीं, खडठउ प्रमुख फारूक अब्दुल्ला, समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव, प्रमुख महबूबा मुफ्ती, अअढ नेता संजय सिंह, उढक नेता डी राजा सहित कठउक्रअ गठबंधन के अन्य नेता यहां मौजूद रहे।

कांग्रेस का सरकार से बाहर रहने का फैसला

जम्मू-कश्मीर प्रदेश कांग्रेस कमेटी (खडठउउ) के प्रमुख तारिक हमीद कर्रा ने आज कहा कि कांग्रेस पार्टी फिलहाल जम्मू-कश्मीर सरकार में मंत्रालय में शामिल नहीं हो रही है। कांग्रेस ने केंद्र से जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करने की जोरदार मांग की है, इसके अलावा प्रधानमंत्री ने भी कई बार सार्वजनिक बैठकों में इसका वादा किया है। लेकिन जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल नहीं किया गया है। हम नाखुश हैं इसलिए फिलहाल हम मंत्रालय में शामिल नहीं हो रहे हैं, प्रमुख ने कहा और कहा कि कांग्रेस पार्टी राज्य का दर्जा बहाल करने के लिए लड़ाई जारी रखेगी।

'2019 के बाद जम्मू-कश्मीर के लोगों को बहुत जख्म लगे'

पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने कहा, 'जम्मू-कश्मीर को बहुत सालों के बाद अपनी एक सरकार मिली है। लोगों ने एक स्थिर सरकार चुनी है। जम्मू-कश्मीर के लिए बहुत मुश्किल दौर है। 2019 के बाद जम्मू-कश्मीर के लोगों को बहुत जख्म लगे हैं।

हम उम्मीद करते हैं कि जो सरकार बनी है वो सबसे पहले इन जख्मों का मरहम करेगी। 5 अगस्त 2019 के फैसले से जो लोगों को तकलीफ हुई है उसके बारे में सबसे पहले प्रस्ताव पास करें और उस फैसले की निंदा करें।'

कारोबार में तरक्की न होने पर शुरू किया नकली नोटों का धंधा, बंगाल से खरीदे 3.50 लाख के नोट

हल्द्वानी। नकली नोट खपाने वाले गिरोह को पकड़कर नैनीताल पुलिस ने बड़ी कामयाबी पाई है। गिरोह बंगाल में एक लाख रुपये के असली नोट देकर 3.50 लाख के नकली नोट खरीदकर लाया था, मगर बड़ी मात्रा में इसे बाजार में खपाने से पहले ही पुलिस ने पकड़ लिया। हालांकि, गिरोह के सदस्यों ने बंगाल से लालकुआं तक पहुंचने में रास्ते में खाने के खर्च व कार में पेट्रोल डलवाने में तकरीबन 30 हजार रुपये के नकली नोट खपा दिए थे। लालकुआं में रहने वाले सरीफ शिवम वर्मा ने नकली नोट खपाने का ताना-बाना बुना था। कारोबार में तरक्की नहीं होने पर उसने नकली नोटों को खपाने की योजना बनाई। इस काम के लिए गिरोह बनाया, जिसमें बरेली के दो युवकों को भी शामिल कर लिया।

भारत-पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों ने दो बार की अनौपचारिक बातचीत

● क्रिकेट संबंधों को सुधारने पर हुई चर्चा

इस्लामाबाद। विदेश मंत्री एस.जयशंकर और उनके पाकिस्तानी समकक्ष इशाक डार ने मंगलवार रात को शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन से इतर दो बार अनौपचारिक बातचीत की। इस दौरान दोनों देशों के बीच क्रिकेट संबंधों को सुधारने पर चर्चा की गई। यह बातचीत रात्रिभोज कार्यक्रम के दौरान हुई, जिसे पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने आयोजित किया था। इस दौरान पाकिस्तान के गृह मंत्री मोहसिन नकवी भी मौजूद थे।

नकवी पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष भी हैं। राजनयिक सूत्रों ने बुधवार को यह जानकारी दी। हालांकि, इस बातचीत से दोनों देशों के बीच की कड़वाहट में किसी भी सुधार का संकेत नहीं मिला। पाकिस्तान के सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार ने जयशंकर की इस्लामाबाद यात्रा को दोनों देशों के बीच जमी बर्फ को पिघलाने वाला दौरा करार दिया। पाकिस्तानी पक्ष ने भारत से अनुरोध किया कि वह फरवरी में पाकिस्तान में होने वाले आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग ले। जयशंकर और डार बुधवार को एक आधिकारिक लंच में एक साथ बैठे और उनके बीच सकारात्मक बातचीत हुई। हालांकि दोनों पक्षों के बीच कोई औपचारिक द्विपक्षीय बैठक नहीं हुई। डार पाकिस्तान के वित्त मंत्री भी हैं। तरार ने कहा, न ही हमने और न ही उन्होंने (भारत) द्विपक्षीय बैठक का अनुरोध किया। लेकिन मैं मानता हूं कि जयशंकर का दौरा बर्फ पिघलाने वाला है। पाकिस्तान के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी जयशंकर के दौरे को सकारात्मक बताया। रात्रिभोज में जयशंकर और शहबाज शरीफ ने गर्मजोशी से हाथ मिलाया और एक-दूसरे से बातचीत की। सुबह में भी शरीफ ने एससीओ शिखर सम्मेलन में जयशंकर का स्वागत किया। इस्लामाबाद से रवाना होने से पहले जयशंकर ने प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और विदेश मंत्री डार का आभार जताया और एससीओ सम्मेलन को उपयोगी बताया। जयशंकर की यह यात्रा महत्वपूर्ण थी, क्योंकि यह करीब नौ साल में पहली बार है, जब भारत का विदेश मंत्री पाकिस्तान पहुंचा।

केदारनाथ विधानसभा सामान्य निर्वाचन हेतु निर्वाचन संबंधित कार्यक्रम की घोषणा

निर्वाचन संबंधी अधिसूचना की तिथि 22 अक्टूबर को होगी जारी
20 नवंबर को मतदान तथा 23 नवंबर को होगी मतगणना

जयन्त प्रतिनिधि। रूद्रप्रयाग : जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी सौरभ गहरवार ने केदारनाथ विधानसभा उप निर्वाचन के संबंध में राजनीतिक दलों के साथ बैठक की। जिला निर्वाचन अधिकारी/ जिलाधिकारी सौरभ गहरवार ने जिला कार्यालय कक्ष में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर अवगत कराया है कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा उत्तराखण्ड राज्य की जनपद रुद्रप्रयाग की 07-केदारनाथ विधानसभा उप निर्वाचन हेतु कार्यक्रम की घोषणा कर दी गई है। जिसके तहत 22 अक्टूबर को अधिसूचना जारी होने की तिथि है तथा 29 अक्टूबर को नाम निर्देशन पत्र प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि है। 30 अक्टूबर को नाम निर्देशन पत्रों की जांच की जाएगी। 04 नवंबर को नाम वापसी की अंतिम तिथि निर्धारित की गई है। 20 नवंबर को मतदान किया जाएगा तथा मतगणना 23 नवंबर को की जाएगी। उन्होंने जानकारी देते हुए कहा कि आयोग द्वारा निर्वाचन की घोषणा के 24 घंटे के अंदर किसी भी शासकीय कार्यालय, परिसर, भवन आदि से सभी प्रकार के बैनर, पोस्टर, पम्पलेट, झंडे, होल्डिंग, वाल पेंटिंग हटाए जाने होंगे। साथ ही 48 घंटे के अंदर विभिन्न जन संपत्तियों बस स्टैंड, रोडवेज, सरकारी बस, विद्युत टेलीफोन, नगर पालिका परिषद आदि से सभी प्रकार की अनाधिकृत राजनीतिक पोस्टर, बैनर आदि हटाने होंगे। निर्वाचन कार्यक्रम की घोषणा के 72 घंटे के अंदर विभिन्न निजी संपत्तियों से सभी प्रकार के अनाधिकृत राजनीतिक प्रचार सामग्री हटाई जानी होगी। उन्होंने कहा कि आदर्श आचार संहिता लागू होने के फलस्वरूप राजनीतिक दलों के प्रत्याशियों द्वारा उप निर्वाचन के लिए जो भी प्रचार-प्रसार एवं कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे उसके लिए रिटर्निंग अधिकारी से अनुमति लेनी अनिवार्य होगी। साथ ही किसी भी निजी संपत्ति पर प्रचार सामग्री चस्पा करने के लिए संबंधित व्यक्ति की अनुमति भी आवश्यक होगी। उन्होंने कहा कि केदारनाथ विधानसभा उप निवाचन में आयोग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार ही प्रचार-प्रसार/कार्यवाही करने की अपेक्षा की गई है। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक अक्षय प्रहलाद कौंडे, यात्रा मजिस्ट्रेट दीक्षिता जोशी, मुख्य विकास अधिकारी डॉ. जीएस खाती, अपर जिलाधिकारी/उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्याम सिंह राणा, भाजपा के प्रतिनिधि सुनील नौटियाल सहित अन्य राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

विमानन मंत्री बोले- बम धमकी के मामलों की जांच कर रहीं एजेंसियां

दिल्ली। विमानन मंत्री के. राममोहन नायडू ने बुधवार को बताया कि कानून प्रवर्तन एजेंसियां सभी बम धमकी के मामलों की सक्रियता से जांच कर रही हैं और सरकार स्थिति की बारीकी से निगरानी कर रही है। हाल ही में, तीन दिनों के भीतर कम से कम 19 उड़ानों को बम धमकियों का सामना करना पड़ा। हालाकि, ये धमकियां बाद में झूठी साबित हुईं। मुंबई पुलिस ने तीन उड़ानों को निशाना बनाने की धमकी देने के आरोप में एक नाबालिग को गिरफ्तार किया है।

केंद्रीय मंत्री ने एक बयान में कहा, जो भी लोग इस तरह की धमकियों के लिए जिम्मेदार हैं, उनकी पहचान की जाएगी और उचित कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने उड़ानों को निशाना बनाने की धमकियों के हाल के मामलों पर अपनी गहरी चिंता व्यक्त की।

अल्जीरिया के बाद मॉरिटानिया पहुंचीं राष्ट्रपति मुर्मू

नौआकचोट। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू अफ्रीका के तीन देशों की यात्रा के दूसरे चरण में बुधवार को मॉरिटानिया पहुंचीं। जहां वो मॉरिटानियाई समकक्ष मोहम्मद औलद गजौनी के साथ वार्ता करेंगी। राष्ट्रपति कार्यालय ने इस यात्रा को लेकर पोस्ट कर जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू अपनी तीन देशों की यात्रा के दूसरे चरण में मॉरिटानिया पहुंचीं। बता दें कि मुर्मू की मॉरिटानिया यात्रा 1960 में अफ्रीकी राष्ट्र के स्वतंत्र होने के बाद से किसी भारतीय नेता की पहली यात्रा है।

राष्ट्रपति का जोरदार स्वागत

मॉरिटानिया की राजधानी नौआकचोट के ओमटौन्सी हवाई अड्डे पर पहुंचने पर राष्ट्रपति मुर्मू का मॉरिटानिया के राष्ट्रपति गज़ौनी ने गर्मजोशी से स्वागत किया। जिसको लेकर राष्ट्रपति कार्यालय ने कहा कि उनका औपचारिक स्वागत किया गया। बता दें कि राष्ट्रपति मुर्मू मॉरिटानिया में भारतीय मुल के नागरिकों को संबोधित भी करेंगी। बता दें कि मॉरिटानिया में 100 से 150 भारतीय रहते हैं।

यात्रा में क्या है खास

जानकारी के अनुसार राष्ट्रपति मुर्मू अपने मॉरिटानिया यात्रा के दौरान राष्ट्रपति गज़ौनी के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता करेंगी और दोनों पक्ष संस्कृति, विदेश कार्यालय संस्थानों, विदेश कार्यालय परामर्श और राजनयिक और आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा छूट समझौतों के क्षेत्रों में चार समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर करेंगी। इसके साथ ही वे मॉरिटानिया के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री से शिष्टाचार भेंट करेंगी।

मूर्मू का अल्जीरिया यात्रा

तीन देशों की यात्रा के पहले चरण में द्रौपदी मुर्मू की अल्जीरिया की सफल यात्रा रही।

छह दिवसीय अंतरराष्ट्रीय नृत्य महोत्सव का हुआ आगाज

दिल्ली। संगीत नाटक अकादमी ने बुधवार को पूसा के एपी शिंदे हॉल में अंतरराष्ट्रीय भारतीय नृत्य महोत्सव का आगाज किया। इसका उद्घाटन संस्कृति और पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने किया। इस दौरान उन्होंने इसे भारतीय नृत्य की भव्य परंपरा का जश्न मनाने वाला महोत्सव बताया। उन्होंने इसमें दुनिया भर के कलाकारों, विद्वानों, और अभ्यासकर्ताओं को महोत्सव के जरिए सांस्कृतिक विरासत को सम्मानित करने के लिए एक साथ लाने की बात कही।

उन्होंने गंगा नदी का उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे गंगा की धारा निरंतर है, वैसे ही ये परंपराएं भी पीढ़ियों से चली आ रही हैं। ये हमें विविधता के बीच गहरी एकता से जोड़ेगी। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महोत्सव के लिए एक विशेष संदेश में कहा कि यह हमारे लिए एक ऐतिहासिक पल है और एक यादगार अवसर है। उन्होंने विभिन्न देशों के कलाकारों की भागीदारी को सांस्कृतिक आदान-प्रदान में मददगार बताया।

उन्होंने बताया कि छह दिनों के आयोजन में 30 सेमिनार होंगे, जिनमें भारतीय नृत्य के ऐतिहासिक और समकालीन विकास, नृत्य शिक्षा, अनुसंधान विधियों और कलाओं पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव जैसे विषयों पर चर्चा होगी। इसमें कलाकारों के लिए स्थाई आजीविका और कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) वित्तपोषण पर भी चर्चा होगी।

मिड-डे-मील के चावल में मिले कीड़े

गुरुग्राम । राजकीय स्कूलों में पहली से आठवीं कक्षा तक के बच्चों को मिड डे मील योजना के तहत बुधवार को भेजे गए चावल में कीड़े मिले। बुधवार को स्कूलों में बच्चों को खाने के लिए दाल और चावल भेजे गए थे। शिक्षकों द्वारा बच्चों को दोपहर का भोजन वितरण करने के दौरान चावल में कीड़े दिखाई दिए। ऐसे में यह खाना बच्चों को वितरित नहीं किया गया। शिक्षकों ने ब्रेड व बिस्किट मंगवाकर बच्चों को खिलाए, ताकि वे दोपहर को भूखे न रहें।

गुरुग्राम के लगभग 445 राजकीय प्राथमिक व मिडिल स्कूलों में पढ़ने वाले 101,438 बच्चों को मिड डे मील योजना के तहत तैयार भोजन इस्कॉन फूड रिलीफ फाउंडेशन द्वारा उपलब्ध कराया जाता है।

उत्तराखण्ड सरकार के साथ एसबीआई सहित पांच बैंकों ने किया एमओयू

● राज्य के 64 प्रतिशत सरकारी कार्मिक होंगे लाभान्वित

जयन्त प्रतिनिधि।

देहरादून : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी एवं वित्त मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल की उपस्थिति में बुधवार को सचिवालय में सरकारी कार्मिकों के लिए कॉर्पोरेट सैलेरी पैकेज और अन्य लाभों के लिए उत्तराखण्ड सरकार के साथ भारतीय स्टेट बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केनरा बैंक और जिला सहकारी बैंक ने एम.ओ.यू किया। अभी राज्य के लगभग 64 प्रतिशत सरकारी कार्मिक जिनका सैलरी खाता इन बैंकों में है, वे इस अनुबंध से लाभान्वित होंगे। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने सरकारी कार्मिकों के हितों को ध्यान में रखते हुए इस अनुबंध का निर्णय लिया। मुख्यमंत्री ने आशा व्यक्त की कि ये सभी बैंक कॉर्पोरेट सैलेरी पैकेज को कर्मचारियों के लिए और लाभकारी बनाने के लिये निरंतर कार्य करते रहेंगे। हमारा प्रयास होगा कि भविष्य में शत-प्रतिशत कर्मचारी इस लाभकारी पैकेज का फायदा उठा सकें। इन बैंकों की शाखाओं में वेतन खातों में वेतन बचत खाते के खाताधारकों को व्यक्तिगत बीमा कवर के साथ-साथ अन्य वित्तीय लाभों की सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी। इसके अंतर्गत कार्मिकों को दुर्घटनास्वरूप मृत्यु, पूर्ण अपंगता तथा आंशिक अपंगता की स्थिति में उनके आश्रितों को क्षतिपूर्ति के रूप में क्लेम का लाभ तथा अन्य लाभ बिना कोई प्रीमियम किये प्रदान किये जायेंगे।

सम्पादकीय

दूषित मानसिकता का भोजन

कभी थूक तो कभी मूत्र आखिर इस समाज में यह क्या सब चल रहा है? यह कौन सी मानसिकता है जो अपने दिमागी खुराफात के लिए दूसरों को दूषित भोजन खिलाने पर आमादा है। उत्तराखंड में अभी हाल ही में दो मामले सामने आए हैं जिसमें एक में थूक कर रोटी बनाई जा रही है तो दूसरी घटना में पर्यटकों के लिए मसूरी में पतीले में थूक कर चाय बनाई जा रही है। वाकई में यह सब बेहद अप्रत्याशित और असंभावित सी घटनाएं हैं जो आज हमारे सामने हो रही हैं। इधर गाजियाबाद में एक घर में काम करने वाली सहायिका ने तो सारी हदों को पार करते हुए घर के लोगों को अपने मूत्र से बनी हुई रोटियां खिला डाली। सीसीटीवी में महिला की यह शर्मनाक घटना उजागर हुई तो उसने मूत्र से बनी हुई रोटियां खिलाने का कारण भी बताया जो काफी हैरान कर देने वाला है। घरेलू कार्य में लापरवाही बरतने पर टोके जाने पर महिला ने घर के लोगों को मूत्र से बनी हुई रोटियां खिलाई। दिल्ली में भी एक ऐसी घटना सामने आई थी जिसमें मोहल्ले के लोगों को जूस में मूत्र बनाकर पिलाया जा रहा था। ऐसी घटनाओं की अब एक श्रृंखला चल पड़ी है जो कि खत्म होने का नाम नही ले रही है। यह पूरी तरह से विकृत मानसिकता के कार्य हैं जो अपनी हताशा निकालने के लिए किए जाते हैं। ऐसे लोगों के लिए उत्तराखंड सरकार ने कड़े नियम कानून बनाए हैं और पकड़े जाने पर एक लाख तक के जुर्माने का प्रावधान रखा है। यही नही उत्तराखंड में तो राज्य सरकार ने रेस्टोरेंट, ढाबों एवं होटल सहित मांस की दुकानों में भी यह प्रदर्शित करना अनिवार्य कर दिया है कि जो मांस परोसा जा रहा है वह किस विधि (हलाल/झटका) से काटा गया है? समाज में पनप रही इस विकृति को रोकने के लिए राज्य सरकारों को कड़े कदम उठाने होंगे अन्यथा यह दूषित भोजन खिलाने का कार्य न जाने कब से चला आ रहा है और भविष्य में कब तक चलता रहेगा? जागरूक लोगों को भी अपने आसपास सतर्क दृष्टि रखती होगी ताकि ऐसे मंसूबे पालने वाले लोग बेनकाब हो और समाज की यह गंदगी सलाखों के पीछे भेजी जाए। अब तक तो यह सुनाई देता था कि एक धर्म विशेष के लोगों द्वारा दूसरे धर्म के लोगों को जानबूझकर थूक वाला भोजन खिलाया जाता है लेकिन इधर अब तो अपनी हताशा एवं दुश्मनी निकालने के लिए भी ऐसी घिनौनी हरकतें घर के नौकरों द्वारा प्रकाश में आ रही हैं। समझ से परे है कि यह आखिर कैसे लोग हैं जिन्हें दूसरों के स्वास्थ्य की चिंता ही नही है और अपनी मानसिक विकृति का उदाहरण इस प्रकार की हरकतें करके दे रहे हैं। यही कारण है कि आज समाज में दो खास समुदाय के बीच खाई गहरी होती जा रही है। कुछ लोगों के कारण ईमानदारी से व्यवसाय करने वाले भी निशाने पर हैं लेकिन कहते हैं कि "गेहूं के साथ घुन भी पिसता है" और यही स्थिति इन दिनों एक धर्म खास विशेष द्वारा बनाए जा रहे भोजन कारोबारियों के साथ देखने को मिल रही है। कहा भी जाता है कि आंखों देखकर मक्खी नहीं निगली जाती, लिहाजा लोग होटल ढाबों में भोजन करने से पूर्व कई अहम बातों को भी ध्यान में रखने लगे हैं। उत्तराखंड में इस दिशा में जरूर एक मिसाल कायम की है और खाने में थूकने व उस अन्य तरीकों से दूषित करने वालों के खिलाफ कड़े दिशा निर्देश जारी करते हुए भारी जुर्माना का प्रावधान भी घोषित कर दिया है। आमजन के स्वास्थ्य और शुद्धता के साथ किसी भी स्तर पर समझौता नहीं किया जा सकता और जो भी ऐसा करेगा उसे निश्चित तौर पर सामाजिक एवं वैधानिक तौर पर दंड मिलना ही चाहिए।

कांग्रेस कमाल की पार्टी रोने बिसूरने में लगी

अजीत द्विवेदी

कांग्रेस कमाल की पार्टी हो गई है। चुनाव हारते ही वह इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन यानी ईवीएम और चुनाव आयोग को कोसना शुरू कर देती है। हालांकि ऐसा नहीं है कि ईवीएम को लेकर सवाल नहीं हैं या चुनाव आयोग की भूमिका पक्षपातपूर्ण नहीं है। चुनाव आयोग की तटस्थता और निष्पक्षता तो काफी पहले तिरोहित हो चुकी है। लेकिन हर बार कांग्रेस के चुनाव हारने का कारण यही नहीं होता है। कांग्रेस हर बार अलग अलग कारणों से हारती है, जिनमें से कुछ कांग्रेस की अपनी राजनीति से जुड़े होते हैं तो कुछ देश की राजनीति और समाज व्यवस्था में आ रहे बदलावों से जुड़े होते हैं।

तभी हरियाणा में कांग्रेस की हार के कारणों को ज्यादा गहराई से समझने की जरुरत है। इसे लेकर कांग्रेस और उसका इकोसिस्टम जो नैरेटिव बना रहा है उसका कोई मजबूत आधार नहीं है। वह सिर्फ पार्टी नेतृत्व को जिम्मेदारी से बचाने, अपनी गलतियों पर परदा डालने और अपने समर्थकों की आंख में धूल झोंकने का एक प्रयास है। साथ ही यह इस बात का भी संकेत है कि कांग्रेस देश की सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था में हुए व्यापक परिवर्तनों की बारीकी को समझ नहीं पाई है या समझ कर भी कबूतर की तरह आंख बंद कर रही है ताकि खतरा नहीं दिखाई दे।

सबसे पहले ईवीएम की ही बात करें तो क्या कांग्रेस यह कहना चाह रही है कि ईवीएम में इस तरह की छेड़छाड़ की गई कि कांग्रेस का वोट प्रतिशत बढ़े और उसकी सीटें भी बढ़े लेकिन वह चुनाव हार जाए? ध्यान रहे कांग्रेस को पिछले चुनाव में 28 फीसदी वोट मिले थे, जो इस बार बढ़ कर 39 फीसदी से ज्यादा हो गया है। यानी उसके वोट प्रतिशत में 11 फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। इसके मुकाबले भारतीय जनता पार्टी का वोट तीन फीसदी बढ़ा है। पिछले चुनाव में भी उसका वोट तीन ही फीसदी बढ़ा था।

कांग्रेस 10 सीटें बागी होकर चुनाव लड़े निर्दलीय उम्मीदवारों के कारण हारी है। तीन सीटों पर इंडियन नेशनल लोकदल और एक सीट पर बसपा को मिले वोट की वजह से कांग्रेस हारी है और पांच सीटों पर आम आदमी पार्टी को मिले वोट के कारण हारी है। एक सीट पर तो कांग्रेस सिर्फ 32 वोट से हारी, जहां आम आदमी पार्टी को ढाई हजार वोट आया। तो क्या कांग्रेस यह कहना चाह रही है कि यह सब बहुत गहरी साजिश का हिस्सा है? इतनी बारीकी से एक एक सीट पर एक एक ईवीएम को इस तरह से मैनेज किया गया कि कांग्रेस का वोट भी बढ़े, निर्दलियों के भी वोट बढ़ें, आम आदमी पार्टी को भी वोट आए और कांग्रेस की हार ऐसी है, जो कम से कम तकनीकी रूप से विश्वसनीय दिखे?

पता नहीं क्यों कांग्रेस नतीजे के राजनीतिक पहलू को नहीं देखना चाह रही है। राजनीतिक हकीकत यह है कि भाजपा ने माइक्रो प्रबंधन के तहत बड़ी संख्या में निर्दलीय उम्मीदवारों को खड़ा कराया और उनको चुनाव लडने में मदद की। ऐसी कोई रणनीति कांग्रेस नहीं बना सकी। इतने दो ध्रुवीय चुनाव में निर्दलीय व अन्य को 12 फीसदी के करीब वोट मिले हैं। दूसरे, यह संयोग कहें या प्रयोग लेकिन हरियाणा में कांग्रेस के जाट और दलित वोट समीकरण में सेंध लगाने वाले दो गठबंधन बने और दोनों ने चुनाव लड़ा। एक इनेलो और बसपा का तो दूसरा जजपा और आजाद समाज पार्टी का। इन दोनों गठबंधनों को साझा तौर पर सात फीसदी वोट मिले। तीसरे, कांग्रेस की एक रणनीतिक गलती यह रही कि उसने लोकसभा की तरह आम आदमी पार्टी के साथ तालमेल नहीं किया। लोकसभा में कांग्रेस ने 10 में से एक सीट उसके लिए छोड़ी थी। आप उम्मीदवार उस सीट पर हार गए थे लेकिन विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के एकजुट

होकर लडने का मैसेज बना था, जिसका फायदा कांग्रेस को यह हुआ कि वह पांच सीट जीत गई। ध्यान रहे विधानसभा में आप को 1.80 फीसदी वोट मिले हैं।

चौथी बात यह है कि कांग्रेस इस मुगालते में रही कि भाजपा की डबल इंजन सरकार के खिलाफ 10 साल की एंटी इन्कम्बैंसी है। लोग उससे उबे हुए हैं और भाजपा ने खुद ही मनोहर लाल खट्टर को मुख्यमंत्री पद से हटा कर मान लिया है कि उसने हरियाणा में अच्छा काम नहीं किया है। लेकिन हकीकत यह है कि हरियाणा में या देश के ज्यादातर राज्यों में भाजपा की सरकारों के खिलाफ एंटी इन्कम्बैंसी जैसी कोई चीज नहीं होती है। कितने भी बरस सरकार चलाने के बाद भी भाजपा अपने वोट नहीं गंवा रही है। जिन राज्यों में वह हारी है वहां भी शायद ही कहीं ऐसा है कि उसके वोट कम हुए हैं। उसका आधार वोट उसके साथ जुड़ा हुआ है क्योंकि हिंदुत्व की अंतर्धारा अब स्थायी हो गई है।सांप्रदायिकता की राजनीति समाज में बहुत गहरे जड़ जमा चुकी है और भाजपा के मौजूदा नेतृत्व की तरफ से पिछले 10 साल से चलाए जा रहे अभियान की परिणति यह हुई है कि भारतीय समाज की संरचना या विचारधारात्मक अंतर्वस्तु में गुणात्मक बदलाव आया है। बहुसंख्यक हिंदू अब मुसलमान को स्थायी तौर पर अपने लिए खतरनाक मानने लगा है। 'अब्दुल को टाइट' करने की धारणा बहुत गहरे तक जड़ जमा चुकी है। पहले आमतौर पर सांप्रदायिक दंगों आदि के बाद इस तरह की धारणा बनती थी। लेकिन अब समाज में स्थायी खदबदाहट है। इस वजह से भाजपा का आधार वोट उसके साथ ज्यादा मजबूती से जुड़ा है और हर चुनाव में इसमें कुछ बढ़ोतरी हो रही है। हरियाणा में भी लगातार तीन चुनावों में यह प्रवृत्ति दिखी है।पांचवें, कांग्रेस ने भाजपा की तरह अपने सामाजिक समीकरण पर ध्यान नहीं दिया। मुख्यमंत्री पद से मनोहर लाल खट्टर को हटा कर भाजपा ने नायब सिंह सैनी के जरिए अन्य पिछड़ी जाति का जो समीकरण साधा उसकी कांग्रेस ने अनदेखी कर दी। इसके उलट वह एंटी इन्कम्बैंसी और जवान, किसान व पहलवान के नाराज होने की धारणा को हवा देती रही। दूसरी ओर हरियाणा के संभवतः पहले ओबीसी मुख्यमंत्री ने 36 फीसदी वोट को एकजुट कर दिया। खट्टर के चेहरे पर यह नहीं हो सकता था। भाजपा को पता था कि खट्टर को हटाने पर भी पंजाबी भाजपा के साथ रहेगा लेकिन सैनी संपूर्ण ओबीसी वोट जोड़ देंगे। उनके साथ भाजपा ने ब्राह्मण प्रदेश अध्यक्ष और पंजाबी, गुर्जर और यादव केंद्रीय मंत्री बनाया।

उसने जान बूझकर हरियाणा से कोई जाट केंद्रीय मंत्री नहीं बनाया। इसका मकसद गैर जाट वोटों को एक मैसेज देना था। छठा, कांग्रेस ने इस सामान्य राजनीतिक सिद्धांत पर ध्यान नहीं दिया कि जब सबसे मजबूत जाति एकजुट होती है तो उसकी प्रतिक्रिया में सामान्य रूप से अन्य जातियों की गोलबंदी होती है। उसने हरियाणा में जवान, किसान और पहलवान के नैरेटिव के साथ भूपेंद्र सिंह हुड्डा की कमान बनने का मैसेज बनने दिया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इससे जाट पूरी तरह कांग्रेस के पक्ष में एकजुट हुआ लेकिन इससे जाटशाही आने का जो मैसेज बना उसको कांग्रेस काउंटर नहीं कर सकी और उसके विरोध में अन्य जातियां एकजुट हो गईं।सातवां, भाजपा के तमाम शीर्ष नेताओं ने हुड्डा के 10 साल के कामकाज यानी 2014 से पहले के दस साल के कामकाज का मुद्दा बनाया। खर्ची और पर्ची से बहाली होने, जमीन में घोटाले और दलितों पर अत्याचार का मुद्दा चर्चा में आया। कांग्रेस ने इसका मजाक तो उड़ाया लेकिन वह प्रभावी तरीके से इसका जवाब नहीं दे सकी। आठवां, संगठन के मामले में कांग्रेस बेहद कमजोर और लापरवाह भी रही। विपक्ष में होने के बावजूद कांग्रेस ने संगठन नहीं बनाया। आठ साल से प्रदेश संगठन नहीं है। अध्यक्ष बदलते रहे और संगठन तदर्थ तरीके से काम करता रहा। पार्टी एक या दो व्यक्तियों के करिश्मे पर निर्भर रही। दूसरी ओर मोदी के करिश्मे और शाह की रणनीति के बावजूद भाजपा ने मजबूत संगठन बनाया, जिसका असर मतदान के दौरान दिखा। यह जमीनी रिपोर्ट है कि अनेक मतदान केंद्रों पर कांग्रेस के पोलिंग एजेंट्स नहीं थे। नौवां, टिकट बंटवारे में कांग्रेस ने कोई होमवर्क नहीं किया। जमीनी फीडबैक लिए बगैर अपनी हवा होने और हुड्डा के सबको जितवा लेने की धारणा पर टिकट बांटे। दसवां, कुमारी सैलजा की नाराजगी को बिल्कुल नीचे तक पहुंचने दिया और उसके बाद संकट प्रबंधन शुरू हुआ। इसका नतीजा यह हुआ कि दलितों का एक बड़ा हिस्सा गैर जाट की हवा में बह गया।

कांग्रेस इकोसिस्टम के लोग कह रहे हैं कि 'हरियाणा के लोगों ने दुष्यंत चौटाला को इसलिए हरा दिया क्योंकि वे भाजपा के साथ चले गए थे लेकिन उसी भाजपा को लोगों ने जीता दिया, यह बात गले नहीं उतरती है'। ऐसे लोग खुद दिशाभ्रम का शिकार हैं और कांग्रेस नेतृत्व को भी हमेशा ऐसे ही भ्रम में डाले रहते हैं। पिछली बार जाट ध्रुवीकरण नहीं था, जिसकी वजह से दुष्यंत की पार्टी को करीब 15 फीसदी वोट मिले थे। इस बार उनके दादा की पार्टी इनेलो का थोड़ा उभार हुआ और दूसरी ओर हुड्डा के साथ साथ विनेश फोगाट यानी पहलवान और किसान व जवान की वजह से जाटों की गोलबंदी कांग्रेस के पक्ष में हुई।तभी दुष्यंत का 14 फीसदी वोट टूटा, जिसका थोड़ा हिस्सा इनेलो को गया और बाकी कांग्रेस के साथ आ गया। कांग्रेस का जो 11 फीसदी वोट बढ़ा है वह लगभग पूरा ही दुष्यंत चौटाला से टूट कर आया है और लगभग पूरा ही जाट का वोट है। सो, कांग्रेस का सामाजिक समीकरण मोटे तौर पर जाट, मुस्लिम और कुछ हद तक उम्मीदवार की जाति का रह गया। गैर जाट वोट कांग्रेस के विरोध में गए, जिसका बड़ा हिस्सा भाजपा को मिला। कांग्रेस को इन राजनीतिक कारणों पर गंभीरता से विचार करने की जरुरत है। लेकिन इसकी बजाय वह साजिश थ्योरी का बहाना बना कर रोने बिसूरने में लगी है।

प्रगतिशील और समावेशी शिक्षा प्रणाली जरूरी

निलीमा झा

भारतीय शिक्षा प्रणाली पुरातन काल से ही हमेशा परंपरा और नवाचार के संगम पर खड़ी रही है, और यह 'वसुधैव कुटुम्बकम' की प्राचीन बुद्धिमत्ता का प्रतीक है, जिसका अर्थ है कि 'संपूर्ण विश्व एक परिवार है।' यह प्राचीन दर्शन आधुनिक संदर्भ में भी पूरी तरह अनुकूल है। जिस प्रकार हम तेजी से तकनीकी उन्नति और वैश्वीकरण की ओर बढ़ रहे हैं, उस प्रक्रिया में भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास वैश्विक समुदाय को प्रभावित करने और प्रेरित करने की क्षमता रखता है।

यह एक सुस्थापित तथ्य है कि भारत की शैक्षणिक विरासत हजारों वर्ष पुरानी है। प्राचीन दशमलव प्रणाली और पाई की अवधारणा जैसे नवाचार यह दर्शाते हैं कि कैसे भारतीय विद्वानों ने वैश्विक ज्ञान को आकार दिया। ये नवाचार सिर्फ गणितीय जिज्ञासाएं नहीं थे, बल्कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विकास की नींव भी बने। आज की चुनौती यह है कि भारत के ऐतिहासिक और समृद्ध साहित्य को समझा जाए और इसे समकालीन जरूरतों के अनुसार अध्ययन कर विकसित भारत की संकल्पना को साकार किया जाए।तेजी से बदलती आज की दुनिया में शिक्षा को केवल पाठ याद करने से परे सीखने की कोशिश पर केंद्रित होना चाहिए। इसका ठोस फोकस समझदारी और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने पर होना चाहिए। जैसे-जैसे हम 2047 की ओर बढ़ते जा रहे हैं, जो भारत के विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, हमें एक ऐसा मजबूत शैक्षणिक ढांचा बनाने की आवश्यकता है, जो रोजगार क्षमता और वास्तविक अनुप्रयोगों के साथ मेल खाता हो। यह रेखांकित किया जाना आवश्यक है कि भविष्य की शिक्षा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, नवाचार और अनुसंधान को एकीकृत करने पर निर्भर है। इन स्तंभों को शामिल कर भारतीय शिक्षा प्रणाली एक जिज्ञासा और समस्या-समाधान की संस्कृति को प्रोत्साहित कर सकती है तथा छात्रों को आधुनिक कार्यबल की जटिलताओं के लिए समुचित रूप से तैयार कर सकती है। वर्तमान में उभरती तकनीकें, जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ), मशीन लर्निंग और ब्लॉकचेन शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही हैं। ये तकनीकें व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव को संवर्धित करने, प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और शैक्षिक परिणामों पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करने में सहायक हो सकती हैं। वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को साकार करने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में समुचित सुधार पर विशेष ध्यान देना अनिवार्य है। इस प्रक्रिया में लड़कियों की शिक्षा पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा। समावेशी शिक्षा केवल सामाजिक न्याय का मामला नहीं है, यह राष्ट्रीय विकास के लिए एक रणनीतिक आवश्यकता है। वहीं, शिक्षा और रोजगार की संगति एक महत्वपूर्ण पहलू है। जैसे-जैसे उद्योग विकसित होते हैं, वैसे-वैसे आवश्यक कौशल लगातार बदलते रहते हैं। शिक्षा प्रणालियों को ऐसे पाठ्यक्रम प्रदान करने के लिए अनुकूलित करना चाहिए, जो वर्तमान और भविष्य की नौकरी के बाजार से संबंधित हों। इसमें शैक्षिक संस्थानों और उद्योग जगत के बीच करीबी सहयोग की आवश्यकता होती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि स्नातकों के पास नियोक्ताओं द्वारा मांगे गये कौशल और ज्ञान हों। आने वाले समय में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) तकनीक और अवसंरचना में निवेश, जिसमें बैटरी विकास और चार्जिंग नेटवर्क भी शामिल हैं, परिवहन को क्रांतिकारी बना सकता है। इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होगी। साथ ही, उच्च-तकनीकी नौकरियों का सृजन भी होगा। इसी तरह भारत में सेमीकंडक्टर निर्माण क्षमताओं को बढ़ाने से आयात पर निर्भरता कम हो सकती है और तकनीकी क्षेत्र में विकास को अधिक प्रोत्साहन मिल सकता है। इसमें डिजाइन, निर्माण और अनुसंधान में नौकरियों का सृजन शामिल है।

लोग किसके वंश को अपना नेतृत्व सौंपेंगे

कांग्रेस पर वंशवाद का आरोप इस हद तक चढ़ा कि पार्टी की जड़ें कमजोर करने में उसकी प्रमुख भूमिका रही। लेकिन तब जो दल और नेता कांग्रेस को निशाना बनाते थे, मौका मिलते ही वे सियासत में अपना वंश बढ़ाने में जुट गए।वैसे चर्चा पहले से थी, लेकिन अब तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन ने अपने बेटे उदयनिधि मारन को अपना औपचारिक उत्तराधिकारी घोषित कर दिया है। ठीक उसी तरह जैसे उनके पिता एम। करुणानिधि ने स्टालिन को अपना उत्तराधिकारी बनाया था। करुणानिधि ने अपनी दूसरी संतानों को भी राजनीति में यथासंभव स्थापित करने में अपनी पूरी ऊर्जा लगाई। उदयनिधि को उप-मुख्यमंत्री बना दिया है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसे एक स्वाभाविक घटना के रूप में लिया गया है। यहां तक कि अखिलेश यादव सहित कुछ नेताओं ने उदयनिधि को बधाई भी दी है। अखिलेश खुद अपने पिता का उत्तराधिकार संभाल रहे हैं। यह भारतीय लोकतंत्र की अजीबोगरीब कहानी है। आज देश का नक्शा लेकर राज्य दर राज्य नजर डालिए, तो ऐसे उत्तराधिकारी हर जगह नजर आएंगे! ऐसी घटनाएं इतनी आम हो गई हैं कि अब वैसा गुस्सा नजर नहीं आता, जिसकी कभी कांग्रेस को भारी कीमत चुकानी पड़ी थी।जब इंदिरा गांधी ने 1970 के दशक में संजय गांधी को अपने उत्तराधिकारी के रूप में आगे बढ़ाना शुरू किया, तो समाज में उसको लेकर एक तरह की वितृष्णा देखी गई। एक विमान हादसे में संजय गांधी की मौत के बाद जब तत्कालीन प्रधानमंत्री अपने बड़े बेटे राजीव गांधी को उनकी पायलट की नौकरी छुड़वा कर राजनीति में खींच लाईं, तो यह वितृष्णा और बढ़ी। जब इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी को प्रधानमंत्री बनाया गया, तो अनेक लोगों ने कहा था कि यह घटना भारतीय नागरिकों को 'प्रजा' बना देना है। कांग्रेस पर वंशवाद का आरोप इस हद तक चढ़ा कि पार्टी की जड़ें कमजोर करने में उसकी प्रमुख भूमिका रही। लेकिन तब जो दल और नेता कांग्रेस को निशाना बनाते थे, मौका मिलते ही वे सियासत में अपना वंश बढ़ाने में जुट गए। भाजपा और कम्युनिस्ट पार्टियां ही शायद ऐसे दल बचे हैं, जहां सर्वोच्च स्तर पर वंश के आधार नेतृत्व तय नहीं हुआ है।

सुरभि ज्योति के लेटेस्ट लुक ने इंटरनेट पर मचाया बवाल, एक्ट्रेस की हॉट फोटोज हुईं वायरल

टीवी एक्ट्रेस सुरभि ज्योति आए दिन अपनी लेटेस्ट तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती रहती हैं। उनका कातिलाना अंदाज इंटरनेट पर आते ही तेजी से वायरल होने लगता है। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपनी लेटेस्ट फोटोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं, जिसमें वो काफी ज्यादा सिजलिंग और हॉट अंदाज में पोज देती हुई नजर आ रही हैं। एक्ट्रेस सुरभि ज्योति हमेशा अपने बोल्ड लुक्स की तस्वीरें फैंस के बीच शेयर कर अक्सर लोगों का सारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। वो जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी तारीफों के पुल बांधते नहीं थकते हैं। अब हाल ही में एक्ट्रेस ने

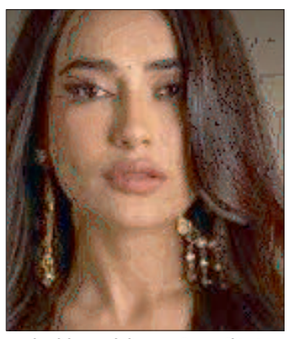

अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें इंस्टा पर शेयर की हैं। इन फोटोज में आप देख सकते हैं एक्ट्रेस कैमरे के सामने एक से बढ़कर एक स्टनिंग अंदाज में पोज देती हुई नजर आ रही हैं। एक्ट्रेस की इन फोटोज में आप देख सकते हैं वो बेहद ही शानदार लुक में नजर आ रही हैं।

फोटोज में आप देख सकते हैं एक्ट्रेस सुरभि ज्योतिन ने व्हाइट कलर का टॉप पहना हुआ है, जिसमें वो बेहद ही कातिलाना लुक में नजर आ रही हैं। सुरभि ज्योति सोशल मीडिया लवर हैं। वो इंस्टाग्राम पर काफी एक्टिव रहती हैं। इंस्टाग्राम पर एक्ट्रेस की फैन फॉलोइंग लिस्ट भी काफी जबरदस्त है। ओपन हेयर और लाइट मेकअप कर के एक्ट्रेस सुरभि ज्योति ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है।

विक्की विद्या का वो वाला वीडियो की कमाई में मामूली बढ़त, जानिए तीसरे दिन का कारोबार

पिछले लंबे वक्त से राजकुमार राव और तृप्ति डिमरी फिल्म विक्की विद्या का वो वाला वीडियो को लेकर चर्चा में हैं। उनकी यह फिल्म बीते शुक्रवार यानी 11 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है।इस फिल्म से निर्माताओं को काफी उम्मीदें थी, लेकिन यह दर्शकों को सिनेमाघरों तक खींचने के लिए संघर्ष कर रही है।अब विक्की विद्या का वो वाला वीडियो के तीसरे दिन के कमाई के आंकड़े सामने आ गए हैं।

बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, विक्की विद्या का वो वाला वीडियो ने अपनी रिलीज के तीसरे दिन यानी पहले रविवार को 6.25 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 18.65 करोड़ रुपये हो गया है।बता दें कि विक्की विद्या का वो वाला वीडियो ने 5.5 करोड़ रुपये के साथ बॉक्स ऑफिस पर धीमी शुरुआत की थी, वहीं दूसरे दिन यह फिल्म 6.9 करोड़ रुपये कमाने में सफल रही।

सुराधा रानी मेमोरियल अंडर -15 क्रिकेट टूर्नामेंट के द्वितीय संस्करण की ट्रॉफी का अनावरण

चंडीगढ़ ,अशोक मल्होत्रा लीजेंड पूर्व भारतीय क्रिकेटर और बीसीसीआई क्रिकेट सलाहकार समिति ने होटल वेस्टर्न कोर्ट, सेक्टर -10, पंचकुला में सुराधा रानी मेमोरियल अंडर -15 क्रिकेट टूर्नामेंट के दूसरा संस्करण की ट्रॉफी का अनावरण किया। इस अवसर में डॉ। संदीप अरोड़ा, संयोजक, वरिदर चोपड़ा, तकनीकी सचिव, डॉ .विक्स शर्मा, शरणजीत सिंह, सचिन बजाज, प्रेम कौशल और अमरजीत कुमार, आयोजन सचिव और सभी भाग लेने वाली टीमों के कोच और कप्तान भी मौजूद थे। अशोक मल्होत्रा पूर्व और लीजेंड भारतीय क्रिकेटर ने मीडिया और दर्शकों को

संबोधित किया और कहा कि मैं वास्तव में सराहना करता हूं और हरियाणा स्पोर्ट्स वेलफेयर एसोसिएशन की सराहना करता हूं, जो सभी सदस्य, जो जमीनी स्तर पर क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं और एक प्रदान करने में लगे हुए हैं शहर के ग्रामीण/पिछड़े क्षेत्रों से नवोदित क्रिकेटरों के लिए मंच। मैं बधाई देता हूं और आयोजकों को शुभकामनाएं देता हूं क्योंकि वे नियमित रूप से पिछले 16 वर्षों से बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय स्तर पर लड़कों और लड़कियों के क्रिकेट को बढ़ावा दे रहे हैं। डॉ। संदीप अरोड़ा ,संयोजक और टूर्नामेंट के आयोजन सचिव अमरजीत कुमार के अनुसार स्वर्गीय सुराधा रानी मेमोरियल अंडर-15 क्रिकेट टूर्नामेंट के इस दूसरे संस्करण में कुल आठ टीमें भाग लेंगी, जो 16 अक्टूबर से आईवीसीए क्रिकेट ग्राउंड, डेरबस्सी में शुरू होगा हर टीम इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में न्यूनतम 4 मैच खेलेंगी।

बंदा सिंह चौधरी का ट्रेलर रिलीज,पंजाब बचेगा तो देश बचेगा

अरशद वारसी और मेहर विज स्टारर फिल्म बंदा सिंह चौधरी का बेहतरीन ट्रेलर रिलीज हो गया है. फिल्म भारत और पाक के युद्ध 1971 के बाद दोनों देशों में हुई सांप्रदायिक हिंसा पर बेस्ड है. फिल्म में अरशद वारसी और मेहर विज अहम रोल में नजर आने वाले हैं. जिनकी प्यार के कहानी के बीच सांप्रदायिक तनाव ने खटास पैदा कर दी है. फिल्म का निर्देशन अभिषेक सक्सेना ने किया है. फिल्म मौजूदा महीने को रिलीज होने जा रही है. बंदा सिंह चौधरी के ट्रेलर की शुरुआत अरशद वारसी से होती है और वह शीशे में अपने बालों को बनाते दिख रहे हैं और इसके बाद फिल्म की हीरोइन मेहज विज की एंट्री होती है, जिसे देख अरशद का दिल फिसल जाता

है. 1975 के बैकड्रॉप में चल रहे सीन में अरशद मेहर से शादी करने के लिए उतावले हो रहे हैं, वहीं अगले सीन में धमाका होता है और ट्रेलर का रुख रोमांटिक से सीधा हमलों पर आ जाता है, उग्रवादी अरशद के गांव में आते हैं और कहते हैं हिंदू पंजाब छोड़ो, इसके बाद कहानी में नई ट्विस्ट आता है और फिर पंजाबी और उग्रवादियों में जंग छिड़ जाती है.अरबाज खान प्रोडक्शंस में बनी फिल्म बंदा सिंह चौधरी आगामी 25 अक्टूबर को रिलीज होने जा रही है. एककेएस मूवीज एंटरटेनमेंट, आआफिल्म्स, मेहर विज प्रोडक्शंस और जी म्यूजिक कंपनी की पेशकश फिल्म दर्शकों को इस्टोरिकल फेज दिखाने जा रही है.फिल्म में भूमिका निभाने वाली अभिनेत्री मेहर विज ने कहा कि जब सब कुछ बिखर जाता है तब यह कहानी उम्मीद और प्यार पाने के बारे में है। यह उस समय मजबूती से खड़े रहने के बारे में है जब दुनिया आपके इर्द-गिर्द बिखर जाती है।फिल्म अपने किरदारों के माध्यम से समुदाय और देश के बीच तनाव को दिखाती है। जिसमें एकता की लड़ाई में दिल और संकल्प दोनों की मजबूती का परीक्षण होता है।

पंजाब स्टेट बैडमिंटन में विहान और मनन ने जीता मेडल

चंडीगढ़ ,पंजाब स्टेट सब-जूनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप में विहान कपूर और उनके डबल्स पार्टनर मनन ने सिल्वर मेडल हासिल किया है। बॉयज डबल्स अंडर-13 वर्ग में दोनों ने पोडियम पर जगह बनाई। स्टेट का आयोजन अबोहर में कया गया था और दोनों को ही कड़े मुकाबले का सामना करना पड़ा।

टीडा स्पोर्ट्स बैडमिंटन एकेडमी के खिलाड़ियों ने किसी को संभलने का मौका नहीं दिया। युवा जोड़ी ने शानदार टीमवर्क और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। विहान कपूर और मनन ने सेमीफाइनल में पंजाब के कुछ शीर्ष खिलाड़ियों को हराकर फाइनल में शानदार प्रदर्शन किया।

68 वीं जिला स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में बहाया खिलाड़ियों ने पसीना

कोंच ,मुहल्ला गांधी नगर स्थित शैक्षणिक संस्था एस आर पी इंटर कालेज में 68 वीं जिला स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया। प्रतियोगिता के दूसरे दिन, अंडर 14, अंडर 17, और अंडर 19 के युवा एथलीटों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में ट्रैक और फील्ड स्पर्धाओं की एक विस्तृत श्रृंखला आयोजित की गई, जिसमें 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर, 3000 मीटर, 5000 मीटर, लंबी कूद, ऊंची कूद, डिस्कस थ्रो, और भाला फेंक जैसे खेल शामिल थे। युवा एथलीटों ने अपनी गति, ताकत और

चपलता का अद्भुत प्रदर्शन किया, जिसमें 100 मीटर दौड़ में प्रतिभागियों ने बिजली की गति से दौड़ लगाई। यह स्पर्धा दर्शकों के लिए रोमांचकारी रही।3000 मीटर की दौड़ गति और सहनशीलता दोनों की परीक्षा थी, जिसमें प्रतिभागियों ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। लंबी कूद में खिलाड़ियों ने हवा में ऊँची छलांग लगाई और सही लैंडिंग के लिए कड़ी मेहनत की। वहीं, डिस्कस थ्रो और भाला फेंक में तकनीक और सटीकता का बेहतरीन प्रदर्शन किया गया।इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक प्रधानाचार्य आशीष पोरवाल, अन्य शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाचार्य और खेल अधिकारियों ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया। निर्णायक मंडल में राजेश सिंह चंदेल, महेन्द्र नाथ पटेल, मिथलेश सिंह, और अन्य उपस्थित रहे।

एक नजर

गुरिल्लाओं ने पीएम को भेजा ज्ञापन

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : एसएसबी गुरिल्ला संगठन ने बुधवार को आयुक्त कार्यालय के माध्यम से प्रधानमंत्री को ज्ञापन भेजकर जल्द ही समस्याओं का हल करने की मांग की है। बुधवार को अपने पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत एसएसबी गुरिल्ला संगठन ने कंडोलिया मैदान के पास बैठक का आयोजन किया। इस दौरान संगठन के केंद्रीय अध्यक्ष ब्रह्मानंद डालाकोटी ने कहा कि नौकरी, पेंशन व आश्रित हित लाभ को लेकर केंद्र व राज्य सरकार कोई कदम नहीं उठा रही है। जिससे गुरिल्लाओं में नाराजगी बनी हुई है। कहा कि जल्द ही समस्याओं का हल नहीं होने पर उग्र आंदोलन किया जाएगा। मौके पर जिलाध्यक्ष मान सिंह नेगी, पीतांबर, अजय वेदवाल, महावीर सिंह, कुंदन सिंह राणा, नरेंद्र प्रसाद, राजेश्वरी देवी, हरिकृष्ण रावत, सावित्री, सुलोचना देवी, मनोरमा, मधुरमा, गुडडी देवी आदि शामिल थे।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को दी वाल्मीकि जयंती की शुभकामनाएं

जयन्त प्रतिनिधि । देहरादून : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेशवासियों को वाल्मीकि जयंती की शुभकामनाएं दी है। मुख्यमंत्री ने वाल्मीकि जयंती की पूर्व संध्या पर जारी अपने संदेश में कहा कि उनके जीवन और उनकी रचनाओं से हमें सत्य, प्रेम और कर्तव्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। महर्षि वाल्मीकि जमीन की सतह से धर्म की पराकाष्ठा प्राप्त करने वाले महात्मा थे, जिन्होंने आदिकाव्य रामायण जैसे कालजयी ग्रंथ की रचना कर एक आदर्श समाज का चित्रण प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि ने सामाजिक सद्भाव और समानता का संदेश दिया। उनके द्वारा दी गई समरसता, सद्भाव तथा मानवता जैसे नैतिक मूल्यों की शिक्षा आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। उनके विचार एवं आदर्श हमें समतामूलक समाज की स्थापना की प्रेरणा देते रहेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम सभी को महर्षि वाल्मीकि के महान दृष्टिकोण एवं उनके द्वारा दी गई शिक्षा को अपने व्यवहार में अपनाने का संकल्प लेना होगा। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा व सम्मान की अभिव्यक्ति होगी।

जिले में बैंक शाखावार लगेंगे शिविर

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के अन्तर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों को योजना का लाभ पहुंचाने के दृष्टिगत जनपद में बैंक शाखावार कैम्पों का आयोजन किया जाना है, जिस हेतु रोस्टर तैयार किया गया है। मुख्य विकास अधिकारी गिरीश गुणवंत ने संबंधित अधिकारियों को विकासखण्डों के अंतर्गत आयोजित बैंक शाखा वार कैंपो हेतु योजना का प्रचार-प्रसार करने को कहा, ताकि समूहों को योजना का समुचित लाभ प्राप्त हो सके। उन्होंने कहा कि खंड विकास अधिकारी उक्त तिथियों में होने वाले कार्यक्रमों के सम्बन्ध में अपने स्तर से क्षेत्रीय अधिकारियों/ कर्मचारियों को नोडल अधिकारी नामित करते हुए कैम्पों के सफल सम्पादन की कार्यवाही सुनिश्चित करवाएंगे। खण्ड विकास अधिकारी अपने-अपने विकासखंड में उक्त कार्य के लिए नोडल अधिकारी होगें।

22 अक्टूबर को लगेगी लोक अदालत

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : आयुक्त महोदय, गढ़वाल मण्डल, पौड़ी द्वारा दिये गये निर्देश के क्रम में जिला स्तरीय विकास प्राधिकरण, पौड़ी में लम्बित / विचाराधीन भवन मानचित्र पत्रावलियों के त्वरित निस्तारण/समाधान हेतु 22 अक्टूबर को प्रातः 11 बजे जिलाधिकारी गढ़वाल की अध्यक्षता में जिला कार्यालय सभागार में लोक अदालत आयोजित की जायेगी। प्राधिकरण की सचिव/अपर जिलाधिकारी इला गिरी ने ऐसे व्यक्ति जिनकी पत्रावली जिला स्तरीय विकास प्राधिकरण, पौड़ी में लम्बित हैं, उनसे उक्त तिथि को नियत समय पर लोक अदालत में अपने अभिलेखीय साक्ष्यों सहित उपस्थित होने की अपील की है।

केदारनाथ उप निर्वाचन हेतु विभिन्न टीमें गठित

जयन्त प्रतिनिधि। रूद्रप्रयाग : केदारनाथ विधान सभा उप निर्वाचन के दृष्टिगत विधानसभा वार निगरानी टीमों का गठन किया गया है जो आवंटित क्षेत्रों में लगातार निगरानी करेंगी। टीमें सक्रियता के साथ चरणबद्ध तरीके से कार्य करेंगी। अपर जिलाधिकारी/उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्याम सिंह राणा ने बताया कि किसी भी व्यक्ति को इस उद्देश्य से पारितोषण देना जिससे उस व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति को निर्वाचन अधिकार का प्रयोग करने के लिए उत्प्रेरित करे अथवा स्वयं अपने लिए या किसी अन्य व्यक्ति के लिए पारितोषण स्थित की श्रेणी में आएगा। ऐसे अपराध के लिए एक वर्ष का कारावास या जुर्माना अथवा दोनों से दंडित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इसके नियंत्रण हेतु निगरानी टीमों का गठन किया गया है। अपर जिलाधिकारी/उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्याम सिंह राणा ने सर्व साधारण को सूचित करते हुए कहा कि धारा–171 (सी) आईपीसी के अंतर्गत जो कोई व्यक्ति निर्वाचन अधिकार के निर्वाध प्रयोग में जानबूझकर हस्तक्षेप करता है अथवा हस्तक्षेप करने का प्रयत्न करता है ।

न्यायालय में चल रही सुनवाई, बाहर उठी बेटी के न्याय की गूंज

अंकिता भंडारी हत्याकांड को लेकर लोगों ने न्यायालय के बाहर किया प्रदर्शन

कोटद्वार में न्यायालय परिसर के बाहर प्रदर्शन करते लोग

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : अंकिता भंडारी हत्याकांड में अब तक फैसला नहीं होने से आक्रोशित लोगों ने बुधवार को सिम्मलचौड़ स्थित न्यायालय परिसर के बाहर प्रदर्शन किया।

कहा कि मामले को डेढ़ वर्ष से अधिक का समय बीत जाने के बाद भी अब तक आरोपियों को सजा नहीं मिल पाई है। नतीजा पीड़ित परिवार न्याय के लिए दर-दर भटक रहा है। लोगों ने न्याय नहीं मिलने तक आंदोलन जारी रखने की भी चेतावनी दी। बुधवार सुबह सुनवाई के लिए मामले से जुड़े तीनों आरोपियों को पुलिस कोटद्वार लेकर पहुंची। इससे पूर्व ही पुलिस ने पूरे न्यायालय को छावनी के रूप में तब्दील कर दिया था। कड़ी सुरक्षा के साथ आरोपियों को न्यायालय में प्रवेश करवाया गया। इसके बाद विभिन्न संगठनों के लोग न्यायालय परिसर के बाहर पहुंचे और पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने की मांग उठाने लगे। सदस्यों ने मौके पर आरोपितों का पुतला भी दहन किया। वक्ताओं ने कहा कि मामले को डेढ़ वर्ष हो चुके हैं। लेकिन, अब तक परिवार को न्याय नहीं मिल पाया है।

ऐसे में न्यायालय से भी आमजन का भरोसा उठता जा रहा है। कहा कि जब तक पहाड़ की बेटी को न्याय नहीं मिलेगा वह अपना आंदोलन जारी रखेंगे। उन्होंने सरकार से भी मामले को गंभीरता से लेने की मांग उठाई। कहा कि उत्तराखंड में बेटियों के साथ अत्याचार किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

धूमधाम से मनाया माता मंगला का जन्मदिवस

कोटद्वार में केक काटकर माता मंगला का जन्मदिन मनाते सदस्य

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : हंस कल्चरल सेंटर की ओर से सेंटर की संस्थापिका माता मंगला का जन्मदिवस धूमधाम के साथ मनाया गया। इस दौरान सदस्यों ने माता मंगला के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का भी संकल्प लिया।

नजीबाबाद रोड स्थित कार्यालय में माता मंगला के जन्मदिवस पर केक काटा गया। सेंटर के प्रदेश प्रभारी पद्मेंद्र सिंह बिष्ट ने कहा कि माता मंगला गरीब, निर्धन, असहाय व्यक्तियों की सेवा में कार्य कर रही है। उनकी ओर से पर्वतीय क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा व रोजगार उपलब्ध करवाने के लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। दूरस्थ क्षेत्र में रहने वाले प्रत्येक गरीब परिवार के व्यक्तियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें इसके लिए समय–समय पर स्वास्थ्य शिविर का भी आयोजन किया जाता है। कहा कि हमें माता मंगला के विचारों को जन-जन तक पहुंचाना चाहिए। जिससे एक बेहतर समाज का निर्माण हो सकें। इस मौके पर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय कुमार पंत, अनीता आर्य, प्रवेश रावत, जसबीर सिंह राणा, धीरेंद्र सिंह, अविरल पंत, राजेश सिंह आदि मौजूद रहे।

विज्ञान महोत्सव 18 को, तैयारियां जोरों पर

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : एससीईआरटी और समग्र शिक्षा के संयुक्त तत्वावधान में जनपद पौड़ी गढ़वाल के विद्यालयों का डा. एपीजे अब्दुल कलाम जनपद स्तरीय विज्ञान महोत्सव का आयोजन 18 अक्तूबर को सिमलचौड़ स्थित टीसीजी पब्लिक स्कूल में किया जायेगा। महोत्सव में पौड़ी जिले के 600 बाल वैज्ञानिक, उनके मार्ग दर्शक शिक्षक और समस्त विकासखंडों के विज्ञान समन्वयक प्रतिभाग करेंगे।

बुधवार को यह जानकारी जिला विज्ञान समन्वयक दौलत सिंह गुसाईं ने देते हुए कहा कि कार्यक्रम में लैंसडौन विधायक महंत दिलीप रावत मुख्य अतिथि एवं जीएसटी के असिस्टेंट कमिश्नर मितेश्वर आनंद विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहेगें। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक मुख्य शिक्षा अधिकारी पौड़ी नागेंद्र बर्तवाल, सहसंयोजक अमित कुमार चंद खंड शिक्षा अधिकारी दुगड्डा, टीसीजी पब्लिक स्कूल सिमलचौड़ कोटद्वार की प्रधानाचार्य नीना घिल्डियाल स्थल समन्वयक के रूप में मौजूद रहेंगे।

आयोजन मंडल में समग्र शिक्षा पौड़ी की जिला समन्वयक गरिमा व्यास, रीना रावत, जिला विज्ञान समन्वयक दौलत सिंह गुसाईं, शिक्षक पारितोष रावत, मुकेश रावत, महेंद्र सिंह राणा, डॉ. जितेंद्र नेगी, संदीप बिष्ट, पूनम पांथरी, रश्मि रावत, सीतांशु खुगशाल, नवीन असवाल, मनमोहन चौहान, मनोज रावत, उमेश वर्मा, दीपक सिंह नेगी, अंबेश पंत, अजय खंतवाल, अंकित पंत आदि को शामिल किया गया है।

घोषणाओं पर कार्य नहीं होने पर मंच ने जताया रोष

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : नागरिक मंच ने कोटद्वार विधानसभा के लिए की गई घोषणाओं के अमल में न आने पर रोष व्यक्त किया है। कहा कि मंच की ओर से इन घोषणाओं के क्रियान्वयन को लेकर ज्ञापन प्रेषित करने के बाद भी प्रदेश सरकार इस ओर ध्यान नही दे रही है। इस संबंध में मंच के अध्यक्ष सीपी नैथानी और महासचिव अतुल भट्ट की ओर से बुधवार को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट को प्रेषित ज्ञापन में कहा गया है कि घोषणाओं का क्रियान्वयन न होने से कोटद्वार विकास कार्यों में पीछे छूटता जा रहा है। कहा कि इन घोषणाओं में मेडिकल कालेज निर्माण, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान स्थापना, कोटद्वार को जिला बनाने की घोषणा, लालढांग-चिलरखाल मोटर मार्ग निर्माण, केंद्रीय विद्यालय स्थापना और बेस हास्पिटल में डाक्टरों की नियुक्ति सहित कई अन्य घोषणाएं शामिल हैं। कहा कि इन घोषणाओं में से किसी के भी धरातल पर न उतरने के कारण क्षेत्रीय जनता में रोष पनप रहा है। ज्ञापन में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष से उक्त घोषणाओं पर सरकार के माध्यम से सकारात्मक कार्रवाई करने की अपील की गई है।

कुकिंग प्रतियोगिता में प्रेरणा अग्रवाल रही अव्वल

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : सामाजिक संस्था उल्लास की ओर से करवा चौथ समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान महिलाओं की मनमोहक प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं, कुकिंग प्रतियोगिता में प्रेरणा अग्रवाल ने अव्वल स्थान प्राप्त किया।

देवी रोड स्थित एक बारातघर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्था की संयोजक रेनू अग्रवाल ने कहा कि महिलाओं के उत्थान के लिए संस्था की ओर से समय-समय पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। कहा कि आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़कर अपना योगदान दे रही हैं। हर चौथी महिला देश की तरक्की में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों से महिलाओं को समाज से जुड़ने का मौका मिलता है। इस दौरान कुकिंग प्रतियोगिता में महिलाओं ने तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन बनाए। प्रतियोगिता में प्रेरणा अग्रवाल प्रथम, शिखा सैनी द्वितीय, एवं ज्योति गुप्ता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं, मिस करवाचौथ (चालीस वर्ष से अधिक आयु) प्रतियोगिता में मनोज चौधरी, मोनिका भाटिया (चालीस वर्ष से कम आयु) वर्ग में भावना जैन ने प्रथम व कनिका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस मौके पर संस्था की संयोजक रेनू अग्रवाल, कनिका अग्रवाल, अदिति, मनीषा, पूनम, पूनम, संगीता आदि मौजूद रहे।

कोटद्वार में सामाजिक संस्था उल्लास की ओर से आयोजित कुकिंग प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाली महिलाएं

किन्नर समाज की वसूली पर रोष, किया प्रदर्शन

किन्नरों पर लगाया शुभ कार्यों में मनमाना पैसा मांगने का आरोप

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : शुभ कार्यों में जबरन लोगों से मनमाना पैसा मांगने पर क्षेत्रवासियों ने किन्नर समाज के खिलाफ प्रदर्शन किया। कहा कि प्रशासन को किन्नरों को दी जाने वाली शगुन राशि निर्धारित करनी चाहिए। जबकि, क्षेत्रवासी पूर्व में भी शासन-प्रशासन के समक्ष यह समस्या उठा चुके हैं। यदि किन्नरों की मनमानी पर रोक नहीं लगी तो आंदोलन को तेज किया जाएगा।

बुधवार को क्षेत्रीय महिलाएं तहसील परिसर में एकत्रित हुई। यहां उन्होंने किन्नर समाज के खिलाफ प्रदर्शन किया। निवर्तमान पार्षद सौरभ नौडियाल व निरुबाला खंतवाल ने कहा कि वर्तमान में किन्नर समाज के लोग शादी-ब्याह संपन्न होने के बाद लोगों के घरों में आ रहे है। बधाई के नाम पर परिवारों से हजारों रूपए की मांग कर रहे हैं। लोगों के असमर्थता जताने पर सामाजिक भय दिखाकर गाली-गलौच कर रहे हैं। कहा कि किन्नर समाज के इस प्रकार की हरकतों पर रोक लगाने के लिए उपजिलाधिकारी को बीते सप्ताह ज्ञापन सौंपा गया था। लेकिन, अभी तक किन्नर समाज के लोगों पर कोई कार्यवाही नहीं हो पाई है। कहा कि प्रशासन की ओर से उनके प्रार्थना पत्र पर कोई कार्यवाही न किए जाने से क्षुब्ध होकर क्षेत्रीय जन सांकेतिक धरने को बाध्य हुआ। कहा कि यदि अब भी प्रशासन ने किन्नरों द्वारा मांगी जाने वाली धनराशि को निर्धारित न किया तो बड़े स्तर पर आंदोलन किया जाएगा। अपर पुलिस अधीक्षक जया बलूनी और तहसीलदार साक्षी उपाध्याय को दिए गए ज्ञापनों में क्षेत्रीय जन ने किन्नरों को दी जाने वाली धनराशि को निर्धारित करने और दी गई धनराशि की रसीद दिए जाने की मांग की। प्रदर्शन करने वालों में गौरव जोशी, आशीष रौतेला, गोविंद सिंह, मेहरबान सिंह, ओमप्रकाश घनशाला, महावीर गुसांई, कांता प्रसाद शामिल रहे।

कोटद्वार तहसील में किन्नर समाज के खिलाफ प्रदर्शन करती महिलाएं

डाक विभाग जल्द खोलेगा पेंशनरों के खाते

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : समाज कल्याण से पेंशन पाने वाले लोगों के करीब साढ़े तीन हजार खाते डाकघरों में जल्द ही खुल जाएंगे। इसके लिए समाज कल्याण ने डाक महकमे को ब्लॉक वार सूची बनाकर दी है। पौड़ी जिले के दूरस्थ क्षेत्र जहां बैंकिंग सुविधाएं बेहद ही सीमित हैं। वहां डाकघरों पर ही अभी लोग निर्भर हैं।

ऐसे में पेंशन को लेकर बैंकों तक जाने में लोगों को काफी दूरी तय करनी पड़ती है। समाज कल्याण विभाग ने इस पेंशनरों की इस समस्या से निजात दिलाने के लिए डाक विभाग का सहयोग लिया। पौड़ी के डाक अधीक्षक दीपक शर्मा ने बताया कि डाक विभाग जल्द ही पेंशनरों के खातों को खोल देगा। इसके साथ ही जीवित प्रमाण देने की व्यवस्था को भी सभी बीओ स्तर पर सुचारु किया जा रहा है। धुमाकोट और सतपुली और अन्य जगहों के आधार सेंटरों पर जो दिक्कतें आ रही थी उन्हें भी दूर कर लिया जाएगा। डाक अधीक्षक ने बताया कि लक्ष्मणझूला और नौगांवखाल में लोगों को सुविधा देने के लिए आधार सेंटर जल्द ही खोले जाएंगे।

मंत्री ने किया विकास योजनाओं का शिलान्यास

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने बुधवार को थलीसैंण में विभिन्न विकास कार्यों का शिलान्यास किया। साथ ही राजकीय इंटर कॉलेज बूंगीधार के स्वर्ण जयंती समारोह में शिक्षकों और छात्रों को सम्मानित किया। शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने कहा कि स्कूलों को चटाई मुक्त कर दिया गया है। शिक्षकों की कमी की समस्या भी दूर की गई है।

स्कूलों में विज्ञान जैसे विषयों में पठन-पाठन ठीक हो इसके लिए प्रयोगशालाएं बनाई जा रही है। इसका लाभ इस दूरस्थ क्षेत्रों की स्कूलो में पठ रहे छात्र-छात्राओं को मिलेगा।

शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने पीठसैंण पहुंचकर जहां पेशावार कांड के नायक वीर चंद्र सिंह गढ़वाली के मूर्ति पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया। वहीं यहां वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पार्क की मरम्मत काम का भी शिलान्यास किया। इसके साथ ही शिक्षा मंत्री ने प्राइमरी स्कूल मैखोली, भरनौ, हाईस्कूल रिक्साल की कंप्यूटर प्रयोगशालाओं के साथ ही राईंका मासौ में 48 लाख की लागत से बनने वाली भौतिक और रसायन विज्ञान प्रयोगशालाओं का शिलान्यास भी किया। इसके साथ ही 28.14 लाख की लागत से बनने वाले राजकीय पूर्व माध्यमिक स्कूल मनियारगांव के भवन निर्माण, 34.64 लाख की लागत से बनने वाले प्राइमरी स्कूल भरनौ के भवन निर्माण का भी शिलान्यास किया।

अटल आदर्श राजकीय इंटर कॉलेज बूंगीधार पहुंचकर शिक्षा मंत्री ने स्कूल की स्वर्ण जयंती समारोह में हिस्सा लिया।

इस मौके पर शिक्षकों और छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

जिला पंचायत सदस्यों ने दिया धरना, वित्तीय अनियमितता का लगाया आरोप

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जिला पंचायत पौड़ी के पटलों पर वरिष्ठ कार्मिकों की तैनाती के साथ ही नियमित अभियंता की तैनाती किए जाने सहित विभिन्न मांगों को लेकर जिला पंचायत सदस्यों ने मोर्चा खोल दिया है। आरोप लगाया कि सरकार से मिले बजट में वित्तीय अनियमितताएं भी की जा रही है। जिला पंचायत सदस्यों ने मांगों पर कार्रवाई होने तक धरना जारी रखने की चेतावनी दी है जिला पंचायत के सदस्यों ने वित्तीय अनियमितताओं का आरोप भी लगाते हुए बुधवार से जिला पंचायत परिसर के बाहर धरना शुरू कर दिया है। धरने पर बैठे इन जिला पंचायत सदस्यों ने कहा कि बीते दो सालों से तिमाही बैठक का भी आयोजन नहीं हो पाया है। साथ ही उन्होंने मौजूदा और बीते वित्तीय वर्ष का केंद्र और प्रदेश सरकार द्वारा दिए गए बजटों का शासनादेश और इसका किन जिला पंचायत क्षेत्रों में आवंटन हुआ इसकी भी जानकारी जिला पंचायत प्रशासन से देने की मांग की है। इसके साथ ही यहां के पटलों पर वरिष्ठ कार्मिकों की तैनाती करने के साथ ही अभियंता व कार्यधिकारी के पद पर नियमित अफसरों की तैनाती की भी मांग की। धरना देने वालों में जिला पंचायत सदस्य गौरव रावत, कुलदीप सिंह, मुकेश बिष्ट, सीमा सजवाण, कुलभूषण आदि शामिल रहे।

मंच ने पचास छात्राओं को दी स्वेटर

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : उत्तराखंड लोक साहित्य एवं सांस्कृतिक मंच की ओर से रजाकीय बालिका इंटर कालेज लालपानी की छात्राओं को स्वेटर वितरित की गई। इस दौरान मंच ने अन्य सामाजिक संस्थाओं से भी गरीब व असहाय परिवार के बच्चों की मदद के लिए आगे आने की अपील की। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की पचास छात्राओं को स्वेटर दी गई। कार्यक्रम का शुभारंभ मंच के अध्यक्ष सत्यप्रकाश थपलियाल ने विद्यालय पसिर में उद्योगपति स्व. रतन टाटा की स्मृति में पौधा रोपण कर किया। उन्होंने कहा कि हमें देश की महानविभूतियों के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। कहा कि मंच के माध्यम से हर साल आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को स्वेटर वितरित की जाती है। कहा कि संस्था का उद्देश्य है कि कोई भी छात्र शिक्षा से वंचित न रहे। विद्यालय की प्रधानाचार्य वंदना भारद्वाज ने स्वेटर वितरित किए जाने पर मंच का आभार जताया। इस मौके पर भुवन मोहन गुसांई, अजय पाल सिंह रावत, जनार्दन प्रसाद ध्यानी, विजय माहेश्वरी, शालिनी माहेश्वरी मौजूद रहे।

विद्यालय परिसर में पौधा रोपण करते सदस्य

संस्कृत के प्रचार-प्रसार का लिया संकल्प

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : उत्तराखंड संस्कृत अकादमी हरिद्वार की ओर से दुगड्डा ब्लॉक की दो दिवसीय संस्कृत छात्र प्रतियोगिता इंटर कॉलेज मोटाढाक में शुरूहो गई है। इस दौरान विद्यार्थियों ने संस्कृत के प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया। साथ ही विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। पहले दिन बुधवार को कनिष्ठ वर्ग की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं। प्रतियोगिता का शुभारंभ बीईओ दुगड्डा अमित कुमार चंद, प्रतियोगिता के जनपद सह संयोजक रमाकांत कुकरेती, विशेष अतिथि पीजी कॉलेज कोटद्वार के संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अर्सणिमा मिश्रा और स्थल संयोजक डॉ. महावीर सिंह बिष्ट ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। बीईओ अमित कुमार चंद्र ने कहा कि संस्कृत भाषा प्रदेश की संस्कृति को निरंतर आगे बढ़ने का कार्य कर रही है। शिक्षा के क्षेत्र में भी संस्कृत ही संस्कृति को आगे बढ़ा सकती है। डॉ. अर्सणिमा मिश्रा ने कहा कि नृत्य, नाटक और गीत के माध्यम से बहुत से बच्चे संस्कृत में बोलना सीख रहे हैं। खंड संयोजक कुलदीप मैंदोला ने बताया कि अकादमी की ओर से ब्लॉक स्तर पर 16वां संस्कृत महोत्सव का आयोजन कर कक्षा 6 से लेकर स्नातकोत्तर तक छात्र-छात्रों को संस्कृत बोलने का अवसर दिया गया है।

आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देते विद्यार्थी

धरना 23 अक्टूबर तक स्थगित

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : अशासकीय विद्यालय प्रबंधक एसोसिएशन अधीनस्थ प्रदेश कार्यकारिणी ने अनिश्चितकालीन धरना 23 अक्तूबर तक स्थगित कर दिया है। बुधवार को शिक्षा विभाग में धरना देने पहुंचे अशासकीय स्कूलों के प्रबंधकों की मुख्य शिक्षाधिकारी से वार्ता हुई। अशासकीय विद्यालय प्रबंधक एसोसिएशन अधीनस्थ प्रदेश कार्यकारिणी के अध्यक्ष अशोक जोशी, सचिव उत्तम सिंह नेगी ने बताया कि बुधवार को मुख्य शिक्षाधिकारी ने अशासकीय स्कूलों की विभिन्न समस्याओं पर जल्द कदम उठाने का आश्वासन दिया है। 23 अक्तूबर तक समस्याएं हल नहीं होने पर अनिश्चितकालीन धरना शुरू किया जाएगा।

उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि०
(उत्तराखण्ड सरकार का उपक्रम)
कॉरपोरेट आइडेन्टीटी संख्या : U40109UP2001SG025867/2358
कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, विद्युत वितरण खण्ड, कोटद्वार

निविदा विस्तार सूचना

विद्युत वितरण खण्ड, कोटद्वार से आमन्त्रित **निविदा सं0 04/24–25 से निविदा सं0 07/24–25** के निविदा प्रपत्र विक्रय करने की तिथि अपरिहार्य कारणवश 23.10.2024 को 13.00 बजे तक बढ़ायी जाती है जो दि0 24.10.2024 के 13.00 बजे तक स्वीकार की जायेगी तथा उसी दिन 15.00 बजे सार्वजनिक रूप से खोली जायेगी। अन्य शर्तें पूर्ववत है।

पत्रांक : 2076/विविखको/टी–6 दिनांक : 16.10.2024

अधिशासी अभियन्ता,
वि0वि0 खण्ड, कोटद्वार

विद्युत बिलों के 24x7 आनलाईन भुगतान हेतु www.upcl.org पर जायें
"राष्ट्र हित में बिजली बचाएं" (Customer Care Toll Free no. 1800 419 0405)

उत्तर रेलवे

ई-नीलामी

मुरादाबाद मंडल के बरेली, मुरादाबाद, हरिद्वार एवं देहरादून स्टेशन के पार्सल कार्यालयों में **सभी आउटगोइंग पार्सल की स्कैनिंग के लिए पार्सल स्कैनर मशीन के अनुबंध** हेतु **05 साल** के लिए ई–नीलामी के तहत दिनांक **30.10.2024** (समय **10:30 am**) को बोली **www.ireps.gov.in** के माध्यम से आमंत्रित की जाएंगी। इसके लिए विस्तृत नियम और शर्तें वेबसाइट पर ही उपलब्ध है। 3202/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण पत्र में पुत्र का नाम संजय एवं माता का नाम श्रीमती गीता देवी भूलवश अंकित हो गया है। जबकि मेरे पुत्र का सही व वास्तविक नाम सौभाग्य एवं माता का नाम गीता बिष्ट है। अतः मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण पत्र में मेरे पुत्र का सही व वास्तविक नाम सौभाग्य एवं माता का नाम गीता बिष्ट अंकित कर जन्म प्रमाण पत्र निर्गत किया जाये।

कमल सिंह बिष्ट पुत्र हरी सिंह निवासी ग्राम देवरामपुर, पोस्ट शिवराजपुर, तहसील कोटद्वार, जिला पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड।
(0501/21)

एक नजर

व्यवसाय शुरू करने के नाम पर ठग लिए 17 लाख

देहरादून। व्यवसाय शुरू करने के नाम पर दंपति से 17 लाख रुपये उधार लेकर ठग लिए गए। 18 लाख रुपये ली रकम वापस करने की एवज में जो चेक दिए उनमें सिर्फ एक लाख रुपये का चेक कैश हो पाया। मामले में प्रेमनगर थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। प्रेमनगर थानाध्यक्ष गिरीश नेगी ने बताया कि लक्ष्मी देवी ध्यानी निवासी विष्णु विहार, श्यामपुर, प्रेमनगर, देहरादून की तहरीर पर ठगी का केस दर्ज किया गया है। उनके अनुसार चंद्रपाल दरिया उर्फ चंद्र दरिया और उनकी पत्नी पूनम दरिया निवासी निकट लक्ष्मी नारायण मंदिर, पंडितवाड़ी, प्रेमनगर ने 8 फरवरी 2021 को व्यवसाय शुरू करने के नाम पर उनसे 18 लाख रुपये उधार लेकर ठग लिए। कई प्रयासों के बाद अभियुक्तों ने बीते 14 नवंबर 2022 को माफीनामा लिखकर 1–1 लाख रुपये के 17 चेक वापस किए। प्रार्थिनी के अनुसार इन चेकों के माध्यम से उन्हें वर्ष 2024 तक अपनी पूरी राशि मिलनी थी। मार्च 2024 तक केवल 1 लाख रुपये ही प्राप्त हुए। बाकी 16 चेक जब 21 मार्च 2024 को बैंक में जमा किए गए तो बाउंस होकर वापस हो गए। महिला का कहना है कि उनके पति सेना से रिटायर हैं और इस घटना के बाद मानसिक तनाव के शिकार हो गए हैं। पुलिस ने आरोपी दंपति के खिलाफ धोखाधड़ी रकम हड़पने के आरोप में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

80 जरूरतमंदों को वस्त्र बांटा

ऋषिकेश। उत्तराखंड परिवहन महसंघ ने बुधवार को हंस फाउंडेशन की संस्थापिका करुणामाई माता मंगला का जन्म दिन धूमधाम से मनाया। उनके जन्म दिन पर महासंघ ने जरूरतमंदों को वस्त्र वितरित किए। बुधवार को उत्तराखंड परिवहन महसंघ ने चार धाम यात्रा बस स्टैंड में कार्यक्रम आयोजित किया। महासंघ सदस्यों ने हंस फाउंडेशन एवं हंस कल्चरल सेंटर की संस्थापक करुणामई माताश्री मंगला के जन्म दिन पर केके काटा और मिष्ठान वितरण किया। उत्तराखंड परिवहन महसंघ के अध्यक्ष सुधीर राय रावत एवं पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष शैलेन्द्र बिस्ट ने कहा की माता मंगला और हंस फाउंडेशन के जनहित के कार्य सर्व विदित हैं। शिक्षा, चिकित्सा के क्षेत्र मे उनके द्वारा अनेको उल्लेखनीय कार्य किये गए है। हम अपने को गोरान्वित महसूस करते है की ऐसी महान विभूति ने उत्तराखंड मे जन्म लिया। ट्रक यूनियन के अध्यक्ष दिनेश बहुगुणा ने कहा कि माता मंगला एवं भोले महाराज उत्तराखंड का गौरव हैं। देवीय आपदा हो, चाहे गरीबों का उत्थान हो, वे सबसे पहले मदद की लिए हाथ बढ़ाते हैं। भगवान उनको दीर्घायु बनाए। इस दौरान 80 से अधिक जरूरतमंदों को वस्त्र वितरित किए गए। मौके पर मनीष शर्मा, क्षेत्र पंचायत सदस्य विनोद चौहान, पूर्व प्रधान सतीश रावत, भगवान सिंह पंवार, एकल मार्ग के अध्यक्ष योगेश उनियाल, पूर्व अध्यक्ष टीजीएमओसी बलबीर रोतेला, दाताराम रतूड़ी, सौरभ वर्मा, बृज बहुगुणा, रुकम पोखरियाल, रेणु नेगी, सरोजनी थपलियाल, नवीन भट्ट, बंटी तिवारी, मुकेश नेगी आदि उपस्थित रहे।

18 अक्तूबर से ऋषिकेश के सिनेमाघर में दिखेगी फिल्म संस्कार

ऋषिकेश, पीआर फिल्म प्रोडक्शन के बैनर तले बनी फिल्म संस्कार उत्तराखंड की संस्कृति और संस्कार पर आधारित है। यह फिल्म 18 अक्तूबर से ऋषिकेश के सिनेमाघर में प्रदर्शित होगी। बुधवार को बस अड्डा स्थित ऋषिकेश प्रेस क्लब में फिल्म के प्रोड्यूसर राजेंद्र भट्ट और निदेशक बृज रावत ने प्रेस वार्ता की। राजेंद्र भट्ट ने कहा कि संस्कार फिल्म गढ़वाल–कुमाऊंकी संस्कृति पर आधारित है। जिसमें पूरी तरह से युवा पीढ़ी को अपने संस्कारों की और आकर्षित कर उन्हें संस्कारों से अवगत कराना भी है। यह फिल्म अभी दिल्ली के विभिन्न सिनेमाघर में दिखाई जा रही है। उत्तराखंड के ऋषिकेश में 18 अक्टूबर को दिखाई जाएगी।

छात्रों को बेसिक लाइफ सपोर्ट की जानकारी दी

ऋषिकेश। रेड फोर्ट इंटरनेशनल स्कूल में विश्व ट्रॉमा सप्ताह के उपलक्ष्य में बुधवार को कार्यशाला आयोजित हुई। एम्स के ट्रॉमा विभाग के विशेषज्ञों ने छात्रों को बेसिक लाइफ सपोर्ट समेत अन्य जरूरी जानकारियां दीं। एम्स ऋषिकेश के ट्रॉमा विभाग द्वारा रेड फोर्ट इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यशाला में स्कूल की प्रधानाचार्य तरंग बेली ने कहा कि विश्व ट्रॉमा सप्ताह का मुख्य उद्देश्य लोगों को दुर्घटनाओं और अन्य आपात स्थितियों में सही कदम उठाने के लिए तैयार करना है। यह कार्यशाला छात्रों को न केवल जागरूक करती है, बल्कि उन्हें संकट के समय दूसरों की मदद करने के लिए भी सशक्त बनाती है।

संस्कृत प्रतियोगिताओं में श्री ज्वाल्पा देवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय का रहा दबदबा

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : विकासखंड कल्जीखाल के ब्लॉक स्तरीय दो दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिता का आयोजन अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज कांसखेत में हुआ। सम्पन्न प्रतियोगिता में विकासखंड के 10 स्कूलों के 86 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस दौरान द्वितीय दिवस वरिष्ठ वर्ग में लगभग सभी प्रतियोगिताओं में श्री ज्वाल्पा देवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय का दबदबा रहा। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि ने स्मृति चिह्न एवं प्रमाण पत्र, नगद धनराशि देकर सम्मानित किया। ब्लाक स्तरीय संस्कृत महोत्सव का उद्घाटन प्रथम दिवस पौड़ी विधायक पौड़ी राजकुमार पोरी ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि संस्कृत हमारी

द्वितीय राजभाषा है। इस भाषा को व्यवहार में लाने के लिए प्रचार-प्रसार की जरूरत है। इस दिशा में उत्तराखंड संस्कृत अकादमी निरंतर बेहतर कार्य कर रही है। द्वितीय दिवस पर वरिष्ठ वर्ग की प्रतियोगताओं में श्री ज्वाल्पा देवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय प्रथम, राजकीय इंटर कॉलेज कांडा द्वितीय व राजकीय इंटर कॉलेज मुंडनेश्वर तृतीय रहा। संस्कृत वाद-विवाद में श्री ज्वाल्पादेवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय प्रथम, अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज कांसखेत द्वितीय स्थान पर रहा। संस्कृत नृत्य में राइंका मवाधार प्रथम, अटल उत्कृष्ट राइंका कांसखेत द्वितीय, राइंका पुरियाडांग तृतीय, संस्कृत श्लोकोच्चारण में श्री ज्वाल्पाधाम संस्कृत विद्यालय प्रथम, राइंका मुंडनेश्वर द्वितीय, राइंका मवाधार तृतीय स्थान पर रहा। जबकि संस्कृत आशुभाषण में मंदीप बेलवाल प्रथम स्थान पर रहे। जबकि संस्कृत एकांकी में महाभारत पर आधरित नाटक दूध क्रीड़ा प्रतियोगिता में श्री ज्वाल्पा आदर्श महाविद्यालय ने जनपदीय प्रतियोगिता के लिए सीधे प्रवेश किया। प्रधानाचार्य राकेश प्रजापति प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन के लिए सभी प्रतिभागियों एवं उनके प्रतिनिधत्व करने वाले शिक्षकों आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि समाजिक एवं पराविधिक कार्यकर्ता जगमोहन डांगी, खंड शिक्षाधिकारी संजय कुमार, डॉ. ममता प्राचार्य श्री ज्वाल्पा देवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, प्रधानाचार्य राकेश प्रजापति, डॉ. मोहमद कादिर, संस्कृत प्रतियोगिता के संयोजक शंशाक पंचभैया, निर्णायक मंडल की पूर्णिमा रावत, केके आर्य, राजकुमार, बिपिन चंद्र उनियाल, डॉ. ज्योति प्रकाश, दीपक रतूड़ी आदि मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन हिंदी प्रवक्ता घनानंद सिंह बागसी एवं ऋतु बौंठियाल ने किया।

जनपद में आदर्श आचार संहिता प्रभावी

बिना पूर्व अनुमति जुलूस व सार्वजनिक बैठक प्रतिबंधित

जयन्त प्रतिनिधि। रूद्रप्रयाग : 7-केदारनाथ विधान सभा उप निर्वाचन-2024 के दृष्टिगत जनपद में तत्काल प्रभाव से आदर्श आचार संहिता प्रभावी हो गई है। जिला मजिस्ट्रेट सौरभ गहरवार ने चुनाव में असामाजिक एवं अवांछनीय तत्वों द्वारा सांप्रदायिक एवं जातिगत भावनाओं को उद्वेलित कर परिशांति भंग करने एवं लोक परिशांति के विक्षुब्ध किए जाने की संभावना के दृष्टिगत भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023 की धारा-163 के प्राविधानों के तहत निषेधाज्ञाएं जारी की हैं। जनपद में आदर्श आचार संहिता के प्रभावी होने के साथ ही जिला मजिस्ट्रेट सौरभ गहरवार के आदेश पर जनपद में किसी भी सार्वजनिक स्थल पर कोई भी सभा या बैठक का आयोजन संबंधित रिटर्निंग ऑफिसर अथवा सहायक रिटर्निंग ऑफिसर की बिना पूर्व अनुमति के नहीं की जा सकेगी। इसके अलावा किसी प्रत्याशी अथवा उनके समर्थकों द्वारा चुनाव प्रचार हेतु ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग भी प्रतिबंधित रहेगा। किसी सार्वजनिक स्थान पर पांच या उससे अधिक व्यक्तियों का समूह बिना अनुमति के नहीं बनाएगा और न ही ऐसे समूह में शामिल होगा।

आदर्श आचार संहिता के प्रभावी होने पर किसी व्यक्ति द्वारा किसी भी सार्वजनिक स्थान पर लाठी, बल्लम, चाकू, तलवार या भाला अथवा आग्नेयास्त्र आदि लेकर नहीं चलेगा और न ही अपने पास रखेगा। कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक स्थान पर किसी के प्रति न तो अपमानजनक भाषा का प्रयोग करेगा और न ही ऐसे नारे लगाएगा जिससे किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचे अथवा शांति भंग होने की संभावना हो।

सभी विभाग समन्वय स्थापित कर प्रस्ताव तैयार करें : डीएम

जयन्त प्रतिनिधि। चमोली : जिलाधिकारी संदीप तिवारी ने बुधवार को वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रस्तावित विकास योजनाओं के प्रस्तावों की समीक्षा की। इस दौरान विभागवार प्रस्तावों पर चर्चा करते हुए उन्होंने सभी विभागों को समन्वय स्थापित कर प्रस्ताव तैयार करने की बात कही। जिससे योजनाओं के प्रस्तावों की पुनरावृत्ति से बचा जा सकेगा।

जिलाधिकारी ने वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम की विभागवार समीक्षा करते हुए मुख्य कृषि अधिकारी को कोल्ड स्टोरेज यूनिट व प्रोसेसिंग यूनिट का प्रस्ताव बनाने के निर्देश दिए। स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास के लिए मुख्य चिकित्साधिकारी के औचित्यपूर्ण प्रस्ताव तैयार करने के आदेश दिए। उन्होंने आंगनवाडी में सोलर पैनल लगाने के लिए उरेडा से प्रस्ताव बनाने, आरडब्लूडी को गेस्ट हाउस और म्यूजियम का निर्माण पहाड़ी शैली में करने के निर्देश दिए। पर्यटन अधिकारी को वाइब्रेंट विलेज में वर्तमान में पर्यटकों की ग्रीष्म और शीतकाल में पर्यटकों की आवाजाही की रिपोर्ट उपलब्ध कराने के आदेश दिए। उन्होंने सिचाई नहरों के निर्माण के लिए विभागीय अधिकारी को कृषि व उद्यान विभाग से समन्वय स्थापित कर प्रस्ताव तैयार करने की बात कही।

सुदृढ़ वित्तीय प्रबन्धन राज्य सरकार का मूल मंत्र : धामी

जयन्त प्रतिनिधि । देहरादून : राज्य में राजस्व वृद्धि के लिए सभी विभागों द्वारा इनोवेटिव प्रयास किये जाएं। विभागों द्वारा राजस्व बढ़ाने के लिए नये स्रोतों पर विशेष ध्यान दिया जाए तथा जिन योजनाओं पर कार्य किया जा रहा है, उनमें राजस्व प्राप्ति बढ़ाने की दिशा में विभागीय सचिवों द्वारा विशेष ध्यान दिया जाए। विभागों द्वारा राजस्व संग्रहण में वृद्धि करने के लिए नए तरीके और रणनीति अपनाई जाए। उन्होंने कहा कि कर संग्रहण प्रक्रिया में और सुधार के साथ ही कर चोरी रोकने के लिए नियमित कड़े कदम उठाये जाएं। यह सुनिश्चित किया जाए कि विकास और जनहित से जुड़े विभिन्न कार्यों का आमजन को पूरा लाभ मिले। कार्यों में मितव्ययता के साथ गुणवत्ता का भी विशेष ध्यान रखा जाए। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने ये निर्देश सचिवालय में वित्तीय मितव्ययता के संबंध में बैठक के दौरान अधिकारियों को दिये। मुख्यमंत्री ने कहा कि सुदृढ़ वित्तीय प्रबन्धन राज्य सरकार का मूल मंत्र है। उन्होंने कहा कि हमें स्वयं के राजस्व संसाधनों में वृद्धि के लिए और तेजी से प्रयास करने हैं। खनन क्षेत्र में राजस्व वृद्धि के लिए किये गये प्रयासों की उन्होंने सराहना की। इस वर्ष खान क्षेत्र में प्रथम छमाही में गत वर्ष की तुलना में 70 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जो कुल वार्षिक लक्ष्य का 52 प्रतिशत प्राप्त हो गया है। एस.जी.एस.टी., परिवहन, आबकारी, वानिकी, ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में राजस्व वृद्धि के लिए और प्रयासों पर मुख्यमंत्री ने बल दिया। उन्होंने कहा कि मितव्ययता के बहुत से आयाम हैं। सुदृढ़ कानून व्यवस्था से जहां एक ओर निवेश बढ़ता है, आर्थिक गतिविधियां भी बढती हैं। राज्य के कर एवं करेत्तर आय में वृद्धि होती है। इसी प्रकार पालिसी इन्टरवेंशन से भी राज्य की आय में वृद्धि हो सकती है तथा मितव्ययता सुनिश्चित की जा सकती हैं।

बैठक में वित्त मंत्री प्रेमचन्द अग्रवाल, मुख्य सचिव श्रीमती राधा रतूड़ी, अपर मुख्य सचिव आनंद बर्द्धन, प्रमुख सचिव न्याय प्रदीप पंत, प्रमुख सचिव आर. के. सुधांशु, एल फैनई, विशेष प्रमुख सचिव अमित सिन्हा, सचिव डॉ. आर. मीनाक्षी सुदंरम, शैलेश बगोली, श्रीमती राधिका झा, नितेश झा, दिलीप जावलकर, सचिन कुवें, रंजीत सिन्हा, डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय, बृजेश कुमार संत, एच. सी. सेमवाल, विनोद कुमार सुमन, डॉ. नीरज खैरवाल, डा. आर. राजेश कुमार, अपर सचिव मनमोहन मैनाली एवं विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष उपस्थित थे।

उत्तराखण्ड के व्यंजनों का स्वाद, संस्कृति और परंपराओं को मिलेगा एक नया आयाम : राज्यपाल

राज्यपाल ने ''सिकदर बेकरी उत्पादों'' की श्रृंखला का किया अनावरण, महान त्रिकोणमिति विशेषज्ञ श्री राधानाथ सिकदर की स्मृति को समर्पित हैं बेकरी उत्पाद

जयन्त प्रतिनिधि।

देहरादून : विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर बुधवार को राजभवन में राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने पर्यटन विकास परिषद और दून बेकर्स एसोसिएशन के ''सिकदर बेकरी उत्पादों'' की श्रृंखला का अनावरण किया। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज भी मौजूद रहे। सिकदर बेकरी उत्पादों की श्रृंखला में सिकदर केक, सिकदर पेस्ट्री और सिकदर कुकीज शामिल हैं। इन उत्पादों को तैयार करने में हिमालयी क्षेत्र की विशेष सामग्री जैसे सी-बकथॉर्न, गोजी बेरीज, केसर और विभिन्न प्रकार के मिलेट्स का प्रयोग किया गया है, जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ पोषक तत्वों से भरपूर है। यह बेकरी उत्पाद महान त्रिकोणमिति विशेषज्ञ राधानाथ सिकदर की स्मृति को समर्पित है, जिन्होंने माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई को मापने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इस अवसर पर राज्यपाल ने उत्तराखण्ड की खाद्य विशिष्टता को दर्शाते हुए गढ़वाली, कुमाउंनी और जौनसारी पेस्ट्री का अनावरण भी किया। गढ़वाली पेस्ट्री वेनिला एसेंस आधारित पेस्ट्री है, जिसमें मुख्य रूप से राज्य के पुष्प, बुरांश का स्वाद है। वहीं कुमाऊंनी पेस्ट्री को अल्मोड़ा के प्रसिद्ध बाल मिठाई के साथ चॉकलेट के स्वाद का मेल कर बनाया गया है, और जौनसारी पेस्ट्री में दूध और अखरोट का उपयोग किया गया है, जो इसे समृद्ध स्वाद प्रदान करता है। ये सभी उत्पाद राज्य के सभी बेकरी, कैफे और

होटलों में उपलब्ध कराये जाने के प्रयास होंगे ताकि उत्तराखण्ड आने वाले पर्यटक इस क्षेत्र के स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद ले सकें। इस मौकेपर राज्यपाल ने कहा कि देहरादून और उत्तराखण्ड अपने खाद्य उत्पादों के लिए प्रसिद्ध है। यहां के मिलेट्स पोषक तत्वों से भरपूर है जिसके कारण पूरी दुनिया में उनकी अलग ही मांग है। उन्होंने अपने उत्पादों में वैल्यू एडिशन करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए। हमारे राज्य की विशिष्टताओं को दर्शाते हुए सिकदर बेकरी उत्पादों की श्रृंखला का शुभारंभ किया गया है। उन्होंने कहा कि यह सभी बेकरी, कैफे और होटलों में उपलब्ध रहें ताकि उत्तराखण्ड आने वाले पर्यटक इनका स्वाद चख सकें। राज्यपाल ने विश्वास जताया कि इन विशेष उत्पादों के माध्यम से उत्तराखण्ड के स्वाद, संस्कृति और परंपराओं को एक नया आयाम मिलेगा। उन्होंने कहा कि हमारी यह पहल स्थानीय उत्पादों और संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ–साथ पर्यटन अनुभव को भी समृद्ध करेगी। उन्होंने कहा कि इन नवाचारों से राज्य के लोगों के साथ ही पर्यटकों को स्थानीय पौष्टिक खाद्य सामग्री उपलब्ध करा पाएंगे, साथ ही इससे स्थानीय लोगों को भी फायदा पहुंचेगा। इस अवसर पर उत्तराखण्ड की कला, संस्कृति और स्थानीय व्यंजनों को देश और दुनिया तक पहुंचाने वाले लोगों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रथम महिला श्रीमती गुरमीत कौर, पूर्व कैबिनेट मंत्री श्रीमती अमृता रावत, अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी पर्यटन विकास परिषद अभिषेक रुहेला सहित विभिन्न होटलियर्स, दून बेकरी एसोसिएशन के पदाधिकारी और अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

राज्य के सभी बेकरी, कैफे और होटलों में सिकदर बेकरी के उत्पादों को करायेंगे उपलब्ध : महाराज

देहरादून : कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज ने कहा कि राधानाथ सिकदर सबसे बड़े विद्वान थे जिन्होंने एवरेस्ट नापा। आज हम उन्हीं को समर्पित करके विश्व खाद्य दिवस मना रहे हैं। इस अवसर पर आज हमें यहां सिकदर बेकरी उत्पादों की श्रृंखला का अनावरण करते हुए भी अपार खुशी हो रही है। प्रसन्नता की बात है कि यह सभी उत्पाद हिमालयी क्षेत्र में पाए जाने वाले तत्वों जैसे सी बकथॉर्न, गोजी बेरीज, केसर और कई प्रकार के बाजरे से तैयार किए गए हैं। इन उत्पादों के बहुत सारे स्वास्थ्य लाभ हैं क्योंकि बताई गई सभी सामग्री में बहुत सारे पोषक तत्व हैं। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि हम उत्तराखण्ड राज्य के सभी बेकरी, कैफे और होटलों में उपरोक्त उत्पादों को उपलब्ध कराने का प्रयास करेंगे, ताकि देवभूमि उत्तराखण्ड आने वाले पर्यटक राज्य के किसी भी हिस्से में इन व्यंजनों का स्वाद ले सकें। उन्होंने कहा कि हम यह भी कोशिश करेंगे कि देवभूमि के धार्मिक और पर्यटन स्थलों में इसे व्यापक रूप से बढ़ावा देने के लिए इन सभी वस्तुओं को बगैर अंडे के ही परोसा जाय।

तीन दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा पूजन सम्पन्न

जयन्त प्रतिनिधि । पौड़ी : कल्जीखाल ब्लॉक के पूर्वी मनियारस्यूं पट्टी स्थित ग्राम देवल में पौराणिक नागेश्वर शिव मंदिर में विधि विधान से प्राण प्रतिष्ठा की गई। इस दौरान विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने भंडारे में प्रसाद ग्रहण कर आशीर्वाद लिया।

विकासखण्ड कल्जीखाल के ग्राम देवल में शिव मन्दिर जीर्णोद्धार और प्राण प्रतिष्ठा सहित तीन दिवसीय पूजन विधि विधान से सम्पन्न हो गया है। प्रमुख महेन्द्र सिंह राणा ने भी पूजन में पहुंचकर आशीर्वाद लिया और पूजा अर्चना की। क्षेत्र पंचायत सदस्य एवं मंदिर निर्माण में संयोजक की भूमिका निभाने वाले दीपक रावत ने बताया कि स्थानीय जन प्रतिनिधियों, ग्रामवासियों, प्रवासियों व महिला मंगल दलों के सहयोग से यह देव कार्य विधिवत सम्पन्न हो गया है। दीपक रावत ने तीन दिवसीय पूजन कार्यक्रम पहुंचने वाले सभी श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया।

एमकेपी कॉलेज रिटायर लाईब्रेरियन के घर में चोरी

देहरादून। एमकेपी पीजी कॉलेज से रिटायर लाईब्रेरियन के घर दिन दहाड़े लाखों की चोरी हो गई। वारदात के दौरान महिला घर का ताला लगाकर निजी काम से सहारनपुर गई थी। वापस लौटने पर चोरी का पता लगा। उनकी तहरीर पर पटेलनगर थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर चोर की तलाश शुरू कर दी है। उम्रा विमल एमकेपी पीजी कॉलेज से रिटायर होने के बाद मोहित विहार, जीएमएस रोड पर रहती हैं। उन्होंने चोरी को लेकर पटेलनगर थाने में तहरीर दी। कहा कि बीते 13 अक्तूबर को सुबह करीब दस बजे वह घर का ताला लगाकर सहानपुर गई थी। देर शाम करीब सात बजे वापस लौटी। इस दौरान देखा तो घर के दरवाजे का लॉक टूटा मिला।

ट्रैफिक जाम से निपटने को भूमिगत सड़क की तैयारी, देहरादून के लिए बना यह प्लान

देहरादून। देहरादून की आबादी लगातार बढ़ रही है जिससे यहां वाहनों का दबाव भी बढ़ता जा रहा है, ट्रैफिक जाम की समस्या चुनौती बन चुकी है। मुख्य सड़कों के किनारे बड़ी इमारतें खड़ी हो चुकी हैं, अब सड़कों का चौड़ीकरण करना संभव नहीं हो पा रहा है। लिहाजा, सरकार जाम से निपटने के विकल्प तलाश रही है। इसके तहत शहर में भूमिगत सड़क की संभावनाएं भी देखी जा रही हैं। पीडब्ल्यूडी ने फिजिबिलिटी स्टडी रिपोर्ट के लिए टेंडर निकाले हैं। आरटीओ में दस लाख से ज्यादा वाहन रजिस्टर्ड हो चुके हैं। सीजन में पर्यटक वाहनों का दबाव बढ़ जाता है, जिस कारण जाम की समस्या नासूर बनती जा रही है। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में कई जगह सड़कें चौड़ी भी हुईं, लेकिन जमीन के अभाव में सड़कों की चौड़ाई ज्यादा नहीं बढ़ पाई। अब भूमिगत सड़क को लेकर संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। रिंग रोड और एलिवेटेड रोड पर आगे नहीं बढ़ी बात एनएचएआई ने शहर में आउटर रिंग रोड का प्रस्ताव भारत सरकार को भेजा हुआ है। इसके पहले चरण का सर्वे हो चुका है। लेकिन अभी तक बात आगे नहीं बढ़ पाई है। रिस्पना और बिंदाल नदी के ऊपर एलिवेटेड सड़क का प्रस्ताव भी तैयार है। पीडब्ल्यूडी मॉडल स्टडी करवा चुका है, विशेषज्ञ हरी झंडी दे चुके हैं। अब शासन को निर्णय लेना है। पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों के अनुसार, फिजिबिलिटी स्टडी रिपोर्ट के आधार पर काम होगा। यदि संभावनाएं दिखीं तो भूमिगत सड़क रिस्पना पुल के पास से शुरू होगी, जिसे राजपुर रोड और और चकराता रोड की तरफ खोला जाएगा। बाकी जगह भी इसे खोला जा सकता है। अभी यह देखा जा रहा कि भूमिगत सड़क बन सकती है या नहीं।

मसूरी में किंक्रेग से शटल सेवा का सर्वे

मसूरी में पुलिस–प्रशासन ने किंक्रेग स्थित कार पार्किंग को सुचारु चलाने की कवायद शुरू कर दी है। मंगलवार को एसडीएम अनामिका, एसपी यातायात मुकेश ठाकुर एवं प्रभारी निरीक्षक अरविंद चौधरी ने निरीक्षण किया। शीघ्र यहां से लाइब्रेरी और मैसानिक लॉज के लिए शटल सेवा शुरू की जाएगी।

नंदा देवी राजजात यात्रा 2026 की तैयारियां शुरू

जयन्त प्रतिनिधि।

चमोली : नंदा देवी राजजात यात्रा 2026 के सुचारु और कुशल संचालन को लेकर जिला प्रशासन ने तैयारियां शुरु कर दी हैं। यात्रा के आयोजन को लेकर बुधवार को जिलाधिकारी संदीप तिवारी ने शासन के निर्देशों के क्रम में सभी संबंधित विभागीय अधिकारियों की बैठक ली। इस दौरान उन्होंने यात्रा मार्गों के सुधारीकरण व यात्रियों की सुविधा के लिए किए जाने वाले निर्माण कार्यों को लेकर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने जिला पर्यटन अधिकारी बृजेंद्र पांडे को यात्रा मार्ग पर किए जाने वाले कार्यों को विभागीय दक्षता के आधार पर प्रस्ताव बनवाने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने निर्माण कार्यों के लिये भूमि चयन के साथ प्रस्ताव

तैयार करने तथा अधिकारियों को आपसी समन्वय स्थापित कर औचित्य के साथ प्रस्ताव उपलब्ध कराने के आदेश दिए। यात्रा मार्ग में होने वाले कार्यों के लिये ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्यों के साथ ही जन प्रतिनिधियों से भी सम्पर्क कर योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर प्रस्तावित करने के निर्देश दिए। बैठक मे मुख्य विकास अधिकारी नंदन कुमार, अपर जिलाधिकारी विवेक प्रकाश सहित उप जिलाधिकारी व खंड विकास अधिकारी वर्चुअल माध्यम से मौजूद थे।

गोर्खा दशैं दीपावली महोत्सव मेला 18 अक्तूबर से गढ़ी कैंट में

देहरादून। गोर्खा दशैं दीपावली महोत्सव मेला 18, 19 और 20 अक्तूबर को गढ़ी कैंट स्थित महेन्द्रा ग्राउंड में आयोजित होगा। वीर गोर्खा कल्याण समिति की ओर से आयोजित इस मेले में रंगारंग सांस्कृतिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ ही गोर्खाली समाज के खानपान और पहनावे को करीब से देखने का अवसर मिलेगा। प्रेस क्लब में हुई प्रेसवार्ता में समिति के पदाधिकारियों ने तीन दिनी इस मेले को लेकर जानकारी देते हुए बताया कि यह मेला गोर्खा दशैं और दीपावली के बीच की कड़ी है। इन दोनों ही पर्व का गोर्खा समाज में बेहद महत्व है। मेले में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के कलाकार अपनी प्रस्तुति देंगे। अध्यक्ष कमल थापा ने बताया कि हर वर्ष की तरह इस बार भी गढ़वाली, कुमाउंनी एवं नेपाली संस्कृति का समागम इस आयोजन में नजर आएगा। विभिन्न प्रकार के स्टॉल में दूनवासियों को अनेक व्यंजनों का आनंद लेने का अवसर मिलेगा। लोग दीवाली की खरीददारी भी कर सकते हैं। प्रेसवार्ता में मौजूद महासचिव विशाल थापा ने बताया कि मेले का शुभारंभ 18 को पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज करेंगे। अति विशिष्ट अतिथि डीजीपी अभिनव कुमार होंगे। 19 को मुख्य अतिथि नेपाली राजदूत डॉ. सुरेन्द्र थापा मौजूद रहेंगे। समापन कार्यक्रम में सीएम पुष्कर सिंह धामी, सांसद त्रिवेन्द्र सिंह रावत, कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी के पहुंचने की संभावना है। मीडिया प्रभारी टेकु थापा ने बताया कि मेले में अंतरराष्ट्रीय गायिका निर्जला गुरुंग, चीज गुरुंग, दृष्टिबाधित गायिका मंदिरा थापा दर्शकों का मनोरंजन करेंगे।

जयन्त
संस्थापक
स्व.नरेन्द्र उनियाल
प्रकाशक,मुद्रक और स्वामी
नागेन्द्र उनियाल द्वारा प्रतिभा प्रेस से मुद्रित तथा बद्रीनाथ मार्ग कोटद्वार (गढ़वाल) से प्रकाशित
–सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
आर.एन.आई. 35469/79
फोन/फैक्स 01382–222383
मो. 8445596074, 9412081969
e-mail:
nagendra.uniyal@gmail.com